मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

সমাজ বিকাস　સમાજ વિકાસ
ਸਮਾਜ ਵਿਕਾਸ　ସମାଜ ବିକାଶ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ मार्च २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक 03

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

२६वां प्रादेशिक अधिवेशन
'जागृति–२००९' २१–२२ मार्च २००९

नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री कमल नोपानी का स्वागत करते हुए सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा

संस्कार विशेषांक
स्वागतम् विक्रम संवत २०६६
नव वर्ष की शुभकामनाएँ

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दो दिवसीय २६वां प्रादेशिक अधिवेशन 'जागृति–२००९' के अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच की प्रान्तीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता बजाज, स्वागताध्यक्ष श्री दशरथ कुमार गुप्ता, श्री विनोद तोदी, बिहार प्रदेश के अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल, अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा, नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कमल नोपानी, अ.भा.अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप मित्तल, बिहार के पूर्व वित्तमंत्री श्री शंकर प्रसाद टेकड़ीवाल, श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन', श्री नारायण अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, श्री निर्मल झुनझुनवाला, राष्ट्रीय स.मंत्री श्री संजय हरलालका।

Insync with Nature...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exporters
(A Pioneer House for Minerals)

* IRON ORE - BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES
* MANGANESE ORE - BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES
* LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE

:: CORPORATE OFFICE ::
RUNGTA HOUSE, CHAIBASA-833201, JHARKHAND
Phone : 06582-256561/256761/25661 Fax : 91-6582-256442
Email : rungtas@satyam.net.in, Web Site : www.rungtamines.com; GRAM : "RUNGTA"

:: CENTRAL MINES OFFICE ::
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL - 758035, DIST.-KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : 06767-275221/277481/441; Fax : 91-6767-276161; GRAM : 'RUNGTA"

:: REGISTERED OFFICE ::
8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA-700017, INDIA
Phone : 033-2281 6580/3751; Fax : 91-33-2281 5380; Email : rungta_cal@sify.com

समाज विकास

मार्च २००९ ✦ वर्ष ५९ ✦ अंक 03 ✦ एक प्रति-10 रु. ✦ वार्षिक-100 रु.

संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
सूचना वार्षिक साधारण सभा	५
अपनी बात – शम्भु चौधरी	६
अध्यक्षीय : म्हारो लक्ष्य राष्ट्र'री प्रगति –नन्दलाल रूँगटा, अध्यक्ष	७
चुनाव संबंधित कुछ सावधानियाँ	८
पाठकों से विनम्र निवेदन	८
राष्ट्र–निर्माण, युवा शक्ति एवं लोकसभा चुनाव – सीताराम शर्मा	९
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दो दिवसीय २६वां प्रादेशिक अधिवेशन 'जागृति-२००९	
कमल नोपानी बने नये अध्यक्ष	१०–१५
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति २००८–२०१०	१६
स्थायी समिति २००८–२०१०	१८
संस्कार विशेष	१९–२९
सम्मेलन के नये सदस्य	३०
पुस्तक समीक्षा/लोकार्पण	३१
युगपथ चरण	३२–३४

समाज विकास अप्रैल माह से नई सदस्यता सूची के अनुसार प्रेषित की जायेगी। सभी प्रांतों से अनुरोध है कि वे अपने प्रान्त की सदस्यता सूची हमें भेजने की कृपा करें।

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail :samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि.

४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

एक अमूल्य पत्रिका

गणतन्त्र दिवस पर 'समाज विकास' परिवार को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं। दिसम्बर २००८ का अंक ११–१२ सधन्यवाद प्राप्त हुआ। यह अंक ''२१वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन एवं ७८वाँ स्थापना दिवस समारोह विशेषांक'' बहुत ही अधिक पसन्द आया व विभिन्न रचनाओं से परिपूर्ण लगा। मुखावरण पृष्ठ माननीय प्रबुद्धजनों के चित्रों व संसद के गरिमामय चित्र से आकर्षक बन गया है।

माननीय श्री ओंकारश्री जी का परिचय व उनकी साहित्यिक यात्रा का वर्णन साहित्यकारों का मार्ग दर्शन करेगा। श्री ओंकारश्री जी ने विशेषकर जो राजस्थानी साहित्य के सृजन में अपना योगदान दिया है उसे भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे महापुरुष को ''राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार २००८'' से सम्मानित करना गौरव की बात है।

'अध्यक्षीय लेख' भी प्रेरणादायी व सटीक लगा। वर्तमान के सन्दर्भ में यह आलेख पाठकों को राष्ट्र व समाज के प्रति सही सोच विकसित करने के लिए प्रेरित करेगा। मारवाड़ी सम्मेलन संस्था का योगदान वास्तव में सराहनीय है आशा है भविष्य में भी इसी मनोयोग से कार्य होता रहेगा। श्रीमान सीता राम जी शर्मा द्वारा अध्यक्ष बनने पर हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट व चित्रों सहित प्रकाशित समस्त सामग्री पठनीय है व ऐसा लगता जैसे कि हम सम्मेलन में उपस्थित रहे हों। गणमान्य व्यक्तियों द्वारा व्यक्त किये गये अमूल्य विचार संग्रहणीय हैं। यदि हम सभी उनका अक्षरश: पालन करें तो हमारा मारवाड़ी समाज अग्रणीय समाजों में माना जाएगा।

परिचर्चा : 'कल, आज और हम' में विभिन्न साहित्यकारों विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए हैं। इन सबके अमूल्य विचार, अमूल्य सम्पत्ति हैं जिसे समाज विकास पत्रिका के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। डॉ. तारादत्त निर्विरोध, डॉ. शंकर लाल स्वामी, नागराज जी शर्मा के विचार जहां हमारे भविष्य के मार्गदर्शन के लिए उपयुक्त हैं वहीं अन्य विचारकों ने भी पाठकों को एक अच्छी सकारात्मक सोच प्रदान की है।

विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों के समाचार भी उपयोगी हैं इस प्रकार सब एक दूसरे से दूर होते हुए भी 'समाज विकास' सब को एक मंच पर लाने व निकटता बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य निभाता है।

'समाज विकास' पत्रिका एक अमूल्य पत्रिका है। प्रत्येक व्यक्ति के पास 'समाज विकास' पहुंचे ऐसा सार्थक प्रयास सब को करना होगा।

महाकवि 'कन्हैयालालजी सेठिया' को समाज विकास ने श्रद्धांजलि देकर उनके साहित्यिक क्षेत्र में योगदान को समझा कि श्री सेठिया वास्तव में महाकवि थे। उन्हें मेरी भी श्रद्धांजलि व कोटि–कोटि नमन।

-रामजीलाल घोड़ेला
चन्द्र साहित्य प्रकाशन,
लूनकरनसर-३३४६०३, बीकानेर (राजस्थान)

◆पहले की भाँति 'समाज विकास' का नवीनांक जनवरी–०९ इस बार भी पूरी साजसज्जा के साथ ज्ञानवर्द्धक, रोचक, अन्वेषणपूर्ण और विचारोत्तेजक सामग्री से भरपूर प्राप्त हुआ है। असीम प्रसन्नता हुई। हार्दिक धन्यवाद! कृपया इसी सद्भावना, उदारता तथा आत्मीयता से सदैव स्नेह सम्बन्ध एवं सतत् सम्पर्क बनाये रखें।

सन्दर्भाधीन समाज विकास का सम्पादकीय ''आतंकवाद को खत्म करने के लिये धर्म को आगे आना होगा'' विशेष रूप से विद्वतापूर्ण और विचारणीय है आतंकवाद न केवल भारत के लिये बल्कि पूरी दुनिया के लिये आज भीषण खतरा बना हुआ है। अपनी रक्षा के लिए इस भयानक विपत्ति को प्रत्येक सम्भव उपाय करके खत्म करना ही होगा। तभी मानवता बची रह सकती है। अक्षय जैन की कविता– ''घर से बड़ा न कोई मन्दिर'' और अनन्त राम मिश्र की कविता–''बाबुल वहां न मुझे ब्याहना'' विशेष रूप से प्रेरणापूर्ण और प्रशंसनीय है। कृपया उन दोनों को हमारी ओर से विशेष बधाई एवं शुभकामनाएँ दे देवें।

'समाज विकास' को और अधिक विकसित करने के लिए यदि आपको कोई असुविधा न हो कृपा करके इसमें साहित्य पक्ष को समुचित प्रतिनिधित्व देने के लिये कहानी अथवा लघुकथाओं का भी समावेश करें जो पत्रिका की रोचकता में वृद्धि करने के लिये प्रर्याप्त सहायक होगा। समाज विकास का प्रत्येक सम्भव व्यापक रूप से प्रचार एवं प्रसार होते रहने की कामना है।

- पण्डित बी०एन०मुद्गल
प्रेस सदन, गद्दी-खेड़ी

अध्यक्षजी के नाम एक पत्र

आज भी वह दिन याद है जब हमलोग श्री तोदी जी के कार्यालय में बैठे हुए थे और आप बिहार मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद के लिए पटना आये थे। आप से वहीं वार्ता में मैंने चर्चा की थी कि आपलोगों के सहयोग से ही अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन का अपना भवन का सपना साकार हो पायेगा। अब यह वर्तमान में हकीकत बन चुका है इसके लिंए हम सबों को गौरव है। समाज विकास का जनवरी अंक मेरे समक्ष है जिसमें धरोहर–१: श्री माहेश्वरी विद्यालय,कोलकाता, धरोहर–२: मारवाड़ी अस्पताल 'वाराणसी', धरोहर–३ गुवाहाटी गोशाला असम की ऐतिहासिक धरोहर, धरोहर–४ बालिका विद्या मंदिर झरिया, धरोहर–५ महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज, झरिया पढ़कर मैं अपने आप को यह पत्र लिखने से रोक नहीं सका। काफी दिनों से इच्छा है कि इस तरह की सामग्री लगातार प्रकाशित की जाए साथ ही यदि संभव हो तो एक कमिटी गठित कर अखिल भारतीय स्तर पर मारवाड़ी समाज द्वारा चलाये जा रहे विद्यालय, कॉलेज, अस्पताल, धर्मशालाएँ एवं अन्य सामाजिक सेवाओं में लगी इकाईयों का विस्तृत ब्योरा पुस्तक रूप में निकाला जाना चाहिए। विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में ताकि आने वाले समय में यह सम्मेलन की एक धरोहर बन सके एवं आने वाले युवा एवं युवतियों के लिए आगे से सेवा कार्य करते रहने का प्रेरणा स्त्रोत बन सके। आशा है इस पर आप विचार कर उचित निर्णय लेगें।

- विजय कुमार बुधिया, प्रबन्ध न्यासी
बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-७०० ००७

दिनांक : २१/०३/२००९

सूचना

सभी सदस्यों की सेवा में,

प्रिय महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा आगामी १९ अप्रैल २००९ को सायं ४.०० बजे सम्मेलन भवन, २५, अमर्हस्ट स्ट्रीट, कोलकाता–९ में निम्नलिखित विषयों के विचारार्थ आयोजित की गयी है।

सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा करेंगे।

सभी सदस्य सादर आमंत्रित हैं।

विनीत

राम अवतार पोद्दार

राष्ट्रीय महामंत्री

संलग्न

वित्तीय वर्ष २००६–२००७ तथा

२००७–२००८ का वार्षिक लेखा–जोखा (डाक द्वारा अलग से प्रेषित)

विचारार्थ विषय :–

१. महामंत्री द्वारा गत बैठक की कार्यवाही की प्रस्तुति।

२. सम्मेलन के वित्तीय वर्ष २००६–२००७ तथा २००७–२००८ के आय–व्यय लेखा–जोखा तथा संतुलन पत्र, जैसा कि सभा के लेखा परीक्षकों द्वारा जाँचा गया है, को स्वीकृत करना।

३. लेखा परीक्षक नियुक्ति करना।

४. विविध–अध्यक्ष की अनुमति से।

अपनी बात

स्वागतम् विक्रम संवत् 2066

सर्वप्रथम आप सभी समाज बंधुओं एवं समाज विकास के पाठकों को विक्रम संवत् २०६६ नव वर्ष की शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

समाज विकास के प्रकाशन का कार्यभार देखते हुए मुझे यह तीसरा साल हो गया, देखते-देखते कैसे वक्त निकल जाता है इसका अंदाजा ही नहीं रहा। नये कार्यकाल में पुनः नई ऊर्जा के साथ संकल्प लेकर इस पत्रिका को नये रूप में देने का प्रयास करूँगा। श्री सीताराम शर्माजी के कार्यकाल में जहाँ समाज विकास में साहित्य, एवं धरोहर के कई अंक आपको देने का अवसर मिला, इस सबके पीछे हमारे पूर्व अध्यक्ष श्री शर्माजी की भावना काम कर रही थी कि समाज के कुछ धरोहर सम्बन्धी जानकारियों का भी प्रकाशन होता रहे, इस बीच तीन-चार साहित्य विशेषांक भी आपको देने का सुअवसर मुझे मिला।

जहाँ एक तरफ समाज के एक वर्ग द्वारा धरोहर अंक को काफी सराहना मिली वहीं साहित्य जगत ने समाज विकास को एक गम्भीर पत्रिका का दर्जा दिया, समाज विकास में देश के जाने-माने साहित्यकारों के पत्र इस बात के पुख्ता प्रमाण है कि इस पत्रिका के स्तर को बनाये रखने में हमने कहीं भी समझौता नहीं किया।

जहाँ एक तरफ समाज के एक वर्ग द्वारा धरोहर अंक को काफी सराहना मिली वहीं साहित्य जगत ने समाज विकास को एक गम्भीर पत्रिका का दर्जा दिया, समाज विकास में देश के जाने-माने साहित्यकारों के पत्र इस बात के पुख्ता प्रमाण है कि इस पत्रिका के स्तर को बनाये रखने में हमने कहीं भी समझौता नहीं किया।

पुनः एक परिवर्तन काल आया। नये सिरे से नेतृत्व ने पदभार ग्रहण किया श्री नन्दलाल रूँगटाजी के नेतृत्व में कार्य करने का अवसर भी मुझे ही मिला स्वभाविक तौर पर नये अध्यक्ष के अनुरूप पत्रिका के स्वरूप में थोड़ा परिवर्तन देखने को मिलेगा। जिसमें साहित्य, संस्कृति, राजस्थानी भाषा, धर्म, ह्रास्य की झलक देखने को मिलेगी। समाज विकास अपने ६०वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। इस पत्रिका को कई विद्वानों ने अपने सम्पादकीय कार्यकाल में काफी ऊँचाइयाँ प्रदान की जिसमें मुख्यतः श्री भँवरमल सिंघीजी, श्री रतन शाह, श्री केसरीकान्त शर्मा 'केसरी' के नाम का जिक्र किया जा सकता है। सौभाग्य की बात है मुझे समाज विकास के प्रायः सभी संपादकों से मिलने एवं उनके साथ कार्य करने का अवसर भी मिलता रहा। उनके अनुभवों का एक तरफ जहाँ मैंने पूरा-पूरा लाभ लेने का प्रयास किया वहीं श्री जुगल किशोर जैथलियाजी, श्री प्रकाश कुमार चण्डालिया, श्री जय कुमार रुसवा का भी भरपूर सहयोग मुझे समय-समय पर मिलता रहा।

सम्मेलन के पितामह श्री नन्दकिशोर जालानजी, जिन्हें मैं पितातुल्य मानता हूँ से भी समय-समय पर पूरा सहयोग मुझे मिलता रहता है, अपनी अस्वस्थता के बावजूद भी वे अपने पास मुझे बुलाते एवं अपनी सलाह देते रहते हैं। जब भी कोई समस्या सामने आती है निःसंकोच मैं उनके पास जाकर उनकी राय लेता रहा हूँ। समाज विकास, सम्मेलन के मुखपत्र के साथ-साथ उसकी हर प्रति दस्तावेज बन जाती है। जिसके मूल में आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों का चिन्तन मुझे समय-समय पर हर रोज नया सीखने का अवसर प्रदान करता रहा है।

इस बार का अंक हम संस्कार अंक के रूप में देने का प्रयास कर रहे हैं। आपको यह अंक कैसा लगा, हमें इसकी जानकारी देंगे।

आपके पत्र की प्रतीक्षा में -

- शंभु चौधरी

अध्यक्षीय:

म्हारो लक्ष्य-राष्ट्र'री प्रगति

- नन्दलाल रुँगटा, अध्यक्ष

आगामी लोकसभा चुनाव का बिगुल बज गया है, पिछले दिनों सम्मेलन के द्वारा देश के विभिन्न प्रान्तों में ''राजनैतिक चेतना शिविरों'' का आयोजन किया गया था। हमारी यह योजना भी थी कि दिल्ली में एक राष्ट्रीय स्तर के शिविर का भी आयोजन हो सके। चूँकि कई प्रान्तों के चुनाव को देखते हुए एवं उसी समय सम्मेलन के साधारण अधिवेशन के चलते ऐसा संभव नहीं हो सका। इन शिविरों के माध्यम से हमने यह प्रयास किया था कि समाज के लोग न सिर्फ चुनावी प्रक्रिया में सक्रिय हिस्सेदारी लेवें, साथ ही चुनाव कार्यलयों में जाकर मतदाता सूची में अपने नाम की जाँच जरूर से करवा लें– कि उनके नाम को किसी ने हटा तो नहीं दिया? या फिर जिन्होंने अभी तक नाम न दर्ज करवाए हों तो मतदाता सूची में अपने और अपने परिवार का नाम जरूर से दर्ज करवायें, साथ ही अपने आस–पास रहने वाले समाज बन्धुओं को भी इस बात के लिये प्रेरित करें कि वे अपने नाम को मतदाता सूची में जरूर से दर्ज करा लेवें। हमें यह सूचना मिली है कि इस बार समाज ने इस बात के महत्व को समझा है और इस दिशा में पहल की है। जिन लोगों ने अभी तक यह कार्य न किया हो वैसे समाज बंधुओं की संख्या को धीरे–धीरे कम करने की आवश्यकता है।

हम लोकतांत्रिक देश के नागरिक हैं देश और संविधान के प्रति भी हमारा यह दायित्व बनता है कि चुनाव की प्रक्रिया में भागीदारी लेकर देश की गणतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत कर हमें बिना किसी जाति–पाँति के अच्छे उम्मीदवार या आप देश के किसी राजनैतिक पार्टी से ताल्लुक रखते हों तो उस दल के उम्मीदवार को अपना मूल्यवान मत देने जरूर जायें। राजनैतिक पार्टियों से समरसता और सहयोग भी बनायें ताकी हमारी एवं हमारे समाज की आशाओं एवं आकांक्षाओं से सम्बन्धित सार्थक वार्तालाप संभव हो सके।

आसन्न संसदीय चुनाव का देश में राजनैतिक स्थिरता एवं आर्थिक विकास की दृष्टि से बहुत महत्व है। विश्व अर्थव्यवस्था एक संकटकालीन स्थिति से गुजर रहा है। भारत इससे अछूता नहीं है आर्थिक मन्दी के चलते रोजगार कम हो रहे हैं एवं वित्तीय व्यवस्था चरमरा रही है। इन गम्भीर आर्थिक चुनौतियों का मुकाबला करने के लिये आने वाले समय में साहसपूर्ण राजनैतिक एवं आर्थिक कदम उठाने की आवश्यकता पड़ेगी। इस संदर्भ में स्थायी एवं मजबूत सरकार का महत्व और भी बढ़ जाता है। वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य में एकदलीय बहुमत सरकार की कोई संभावना नहीं है। मिली–जुली सरकार का कोई विकल्प नहीं दिखता है। त्रिशंकु संसद गम्भीर राजनैतिक परिस्थिति प्रस्तुत कर सकती है। राजनैतिक दलों एवं नेताओं के साथ–साथ मतदाताओं को बड़ी सुझबूझ एवं परिपक्वता का परिचय देना है। बढ़ते आतंकवाद एवं कठिन आर्थिक संकट की वर्तमान स्थिति में एक मजबूत केन्द्रीय सरकार समय की मांग है। हम सभी को इसमें अपनी भूमिका निभानी है।

हमारा समाज कई पीढ़ियों से देश के विभिन्न हिस्सों में रच–बस गया है। जो जिस प्रान्त में बसा, उस प्रान्त की भाषा–साहित्य–संस्कृति को न सिर्फ अपनाया अपितु उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दिया है। असम के श्री ज्योतिप्रसाद अगरवाला एवम् इनका परिवार इस बात का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। सम्मेलन की नींव रखने वालों ने भी यह नारा– ***''म्हारो लक्ष्य-राष्ट्र'री प्रगति''*** रखा है। हम राष्ट्र की एकता और अखण्डता के साथ–साथ प्रान्तीय समरसता में विश्वास करते हैं। हम चाहते हैं कि जिस प्रान्त में हम रहते हैं उस प्रान्त की स्थानीय भाषा को भी हम अपनाएँ। उस प्रान्त के लोगों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर समाज सेवा के कार्य किये जायें। समाज ने विभिन्न प्रान्तों में समाज सेवा के जो भी कार्य किये हैं उनके आँकड़े एकत्र करने की योजना भी हमें बनानी होगी। इस कार्य के लिये हमें सभी प्रान्तों का विशेष सहयोग यदि मिला तो जल्द ही हम इस तरह के कुछ संकलन प्रकाशित कर पाएँगें।◆

चुनाव

चुनाव संबंधित कुछ सावधानियाँ-

◆सम्मेलन के राष्ट्रीय, प्रान्तीय, जिला और शाखा स्तर के किसी भी पदाधिकारी को, किसी भी व्यक्ति या किसी भी दल के प्रति, पक्ष या विपक्ष में कोई भी अधिसूचना या वक्तव्य जारी करने का कोई अधिकार नहीं होगा।

◆*"मारवाड़ी-मारवाड़ी को ही वोट दें"* इस तरह के नारे का कोई भी मारवाड़ी उम्मीदवार या अभ्यर्थी प्रयोग नहीं करेगा। हमें समस्त भारतीय परिप्रेक्ष्य में या किसी राजनीतिक दल के सदस्य हों तो उस दल के मेनिफेस्टो को ध्यान में रखते हुए, स्थानीय समरसता के साथ स्थानीय, प्रान्तीय या राष्ट्रीय मुद्दों के आधार पर ही स्थानीय समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर ही चुनाव लड़ना चाहिये। किसी भी राजनैतिक दल को सहयोग देते समय यह सुनिश्चित कर लेवें कि वो समाज को मान देतें हैं कि नहीं या सिर्फ समाज के धन को प्राप्त करने के लिये टिकट दे रहें हैं। राज्यसभा/लोकसभा/विधानसभा की टिकट खरीदकर न तो राज्यसभा में जायें न ही लोकसभा /विधानसभा के लिये अपनी उम्मीदवारी पेश करें। राजनीति में सक्रिय योगदान देना चाहते हैं तो स्थानीय समरसता को ध्यान में जरूर रखें।

◆ किसी ऐसे क्षेत्र जहाँ मारवाड़ी समाज की संख्या अधिक है उस चुनाव क्षेत्र का दावा करते समय कोई भी पदाधिकारी अपने पद से त्यागपत्र देकर ही इस तरह का दावा किसी राजनैतिक पार्टी के पास भेजें। सम्मेलन के किसी भी स्तर के सहयोग पत्र या पद का प्रयोग किसी भी तरह नहीं किया जाना चाहिये।

◆किसी भी मारवाड़ी उम्मीदवार के पक्ष या विपक्ष में कोई भी अधिसूचना सम्मेलन के नाम से जारी नहीं की जायेगी।

◆मतदान के दिन या पहले किसी भी तरह के विवादास्पद मुद्दे को लेकर सम्मेलन की तरफ से कोई वक्तव्य जारी करने का अधिकार सिर्फ केन्द्रीय समिति को ही होगा। आवश्यकता पड़ने पर प्रान्तीय पदाधिकारी फोन पर भी केन्द्रीय पदाधिकारियों से राय या विचार करने के बाद ही अपना विचार मीडिया को जारी कर सकेंगे।

आईये ! हम देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी और अपने दायित्व को पूरा करने के लिये कृतसंकल्प होकर देश के संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह करें और मतदान प्रक्रिया में अपनी सहभागिता निभायें। ◆

निवेदन

समाज विकास के पाठकों से विनम्र निवेदन

"सम्मेलन के सदस्य अपना बकाया शुल्क समय पर जमा कर हमें समाज विकास उन्हें बराबर भेजते रहने में सहयोग करें।"

◆*समाज विकास अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का हिन्दी मासिक मुखपत्र है।*

◆*सम्मेलन की मुख्य विचारधारा-समाज सुधार एवं समरसता के सन्देश को समाज के अधिकाधिक भाई-बहनों तक पहुँचाने का एक मुख्य साधन समाज विकास है।*

◆*सम्मेलन के सभी सदस्यों को समाज विकास निःशुल्क भेजा जाता है। समाज विकास के माध्यम से हम सम्मेलन एवं समाज के बीच लगातार संवाद बनाये रखना चाहते हैं। अतः कतिपय सदस्यों के वर्षों तक शुल्क बकाया रहने पर भी हमने समाज विकास उन्हें बराबर भेजना जारी रखा।*

◆*लेकिन बढ़ते खर्च के चलते अब इसे जारी रखना संभव नहीं हो पा रहा है। अतः समाज विकास प्रबन्धन ने यह निर्णय लिया है कि जिन सदस्यों का सदस्यता शुल्क वर्ष २००६ से बकाया है उन्हें आगामी १ अप्रैल २००९ के बाद समाज विकास भेजना संभव नहीं हो पायेगा।*

◆*हम आपके साथ जुड़े रहना चाहते हैं अतः आपसे सादर अनुरोध है कि आप अपना बकाया सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजने की कृपा करें जिससे हमारा संवाद आपसे लगातार बना रहे।*

आपके सहयोग की कामना के साथ

- सम्पादक

राष्ट्र-निर्माण, युवा शक्ति एवं लोकसभा चुनाव

- सीताराम शर्मा

वर्ष २०२० तक भारतवर्ष की कुल आबादी का ७० प्रतिशत हिस्सा ३४ वर्ष से कम आयु का होगा। भारत को एक युवा देश माना जाता है। क्या यह युवा शक्ति देश में परिवर्तन के सूत्रधार का रूप ले सकती है? क्या भारत में एक युवा क्रांति सम्भव है? किसी ने कहा है कि प्रत्येक पीढ़ी को एक परिवर्तन क्रान्ति की आवश्यकता होती है। क्या भारत का युवा वर्ग परिवर्तन की चुनौती को स्वीकार करने के लिये तैयार एवं तत्पर है?

पिछले कुछ वर्षों में युवा वर्ग ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी क्षमता, दक्षता, बुद्धि एवं साहस के बल पर आशातीत सफलताएं प्राप्त की हैं। अभिनव बिन्द्रा द्वारा २००८ ओलम्पिक में स्वर्ण पदक प्राप्त करना इसका एक उज्जवल उदाहरण है। लेकिन अभिनव की स्वर्णिम सफलता उनकी अपनी व्यक्तिगत मेहनत एवं प्रतिबद्धता का सुफल है। इसमें सरकार या व्यवस्था का कोई योगदान नहीं है। एक स्पष्ट संदेश जाता है कि युवा वर्ग को सरकार या व्यवस्था पर निर्भर रहकर सफलता के लिये प्रयास नहीं करना है। उसे इसके बावजूद श्रेष्ठता प्राप्त करनी है। इसके साथ–साथ उसे समाज एवं व्यवस्था को बदलने के लिये भी प्रयास करना है।

देश में आमूल परिवर्तन राजनेताओं के माध्यम के बगैर संभव नहीं है। इसके लिये देश की राजनीति में भी परिवर्तन घटना आवश्यक है। नि:सन्देह आप सांसद या विद्यायक के रूप में देश में परिवर्तन के माध्यम बन सकते हैं। आज की राजनीति में युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व उसकी जनसंख्या के अनुपात में नहीं है। राजनैतिक दल इस विषय में उदासीन है।

२१वीं शताब्दी भारत की शताब्दी है। हमारा देश एक उन्नत एवं मजबूत राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। युवा जनसंख्या हमारी एक बड़ी ताकत है। भारत विश्व की ५वीं सबसे बड़ी आर्थिक ताकत है। भारतीय युवा वर्ग के सम्मुख अवसरों एवं चुनौतियों का अम्बार खड़ा है। युवा वर्ग सक्षम है, उत्सुक है लेकिन कहीं न कहीं वर्तमान व्यवस्था उसे निरुत्साहित करती है। जो सत्ता में हैं, जिनके पास कुर्सी एवं ताकत है उन्हें अपनी सकारात्मक भूमिका निभानी है। युवा वर्ग को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना है।

आज की युवा पीढ़ी जाग्रत है, अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति एवं युवा वर्ग देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिये तत्पर है। उसे अपने भारतीय होने पर गर्व है। वह दुनिया में श्रेष्ठतम से कम नहीं है। वह वर्तमान व्यवस्था के निकम्मेपन को चुपचाप स्वीकार करने को तैयार नहीं है। व्यवस्था में सुधार नहीं होने पर वह उस व्यवस्था को उखाड़ फेकने के लिये तैयार है। २६/११ के मुम्बई पर आंतकी हमले पर ५०००० से अधिक लोग सड़कों पर उतर आये। दिल्ली की गद्दी हिल गयी, युवा वर्ग के गुस्से का पहाड़ फूट पड़ा था। भारत का युवा यथास्थिति को स्वीकार करने के मिजाज में नहीं है।

देश में १५वीं लोकसभा का चुनाव आगामी महीनों में सम्पन्न होने जा रहे हैं। ये चुनाव देश के भविष्य के लिये दूरगामी परिणाम प्रस्तुत करेंगे। देश के मुख्य राजनैतिक दल कांग्रेस एवं भाजपा लगातार कमजोर हो रहे हैं। एक–दलीय सरकार की कोई संभावना नहीं दिख पड़ती। देश एक ओर खिचड़ी सरकार की ओर जा रहा है। विभिन्न राजनैतिक दलों की 'मिली जुली सरकार' अपने आप में अनुचित नहीं है, लेकिन राजनैतिक दलों की नीतिविहीन, अनैतिक, सिद्धान्तहीन जोड़–तोड़ की राजनीति देश के लिये शुभ नहीं है।

युपीए एवं एनडीए दोनों की नकेल छोटे क्षेत्रीय दलों के हाथ में है। गठबन्धन टूट रहे हैं एवं सिर्फ 'गद्दी' के आधार पर समझौते जोड़े या तोड़े जा रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों में राजनैतिक दल अपनी वैचारिक एवं सैद्धांतिक ईमानदारी को ताक पर रखकर हर तरह का अनुचित एवं अनैतिक सौदाबाजी कर रहे हैं। साफ छवि के उम्मीदवारों को बलि का बकरा बनाया जा रहा है एवं प्राय: सभी राजनैतिक दल कमो–बेश रूप में जीतने की ललक में अपराधी छवि के उम्मीदवारों को चुनाव में उतार रहे हैं।

दुर्भाग्यवश देश का युवा वर्ग इस तरह की चुनाव प्रक्रिया में अपने आप को अलग थलग पाता है। गद्दी की यह नंगी लड़ाई युवा वर्ग को चुनाव प्रक्रिया में भागीदारी के लिए प्रेरित करने के बजाय उसे निरुत्साहित करती है। उसे राजनीति गंदी प्रतीत होती है, वह अपने आप को इससे अलग रखना बेहतर समझता है। लेकिन युवा वर्ग की ऐसी मनोदशा एवं विचारधारा देश के लोकतंत्र के लिये खतरनाक है। युवा वर्ग को अपनी भूमिका निभानी है। उसे ही उम्मीदवारों को चुनना है। इतना ही नहीं उन्हें अपने आप को उम्मीदवारों के लिये प्रस्तुत करना है। राजनीति एवं चुनाव देश के भविष्य, देश में परिवर्तन एवं देश के विकास के लिये महत्वपूर्ण हैं इस प्रक्रिया में युवा वर्ग की सक्रिय भागीदारी ही भारत के उज्जवल भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है।◆

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

बिहार का दो दिवसीय अधिवेशन सम्पन्न

कमल नोपानी बने नये अध्यक्ष

पारिवारिक मूल्यों में आ रही गिरावट रोकना जरूरी : रुँगटा

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दो दिवसीय २६वां प्रादेशिक अधिवेशन 'जागृति–२००९ अ.भा.अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप मित्तल, स्वागताध्यक्ष श्री दशरथ कुमार गुप्ता, अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा, नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कमल नोपानी, बिहार प्रदेश के अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल, बिहार के पूर्व वित्तमंत्री श्री शंकर प्रसाद टेकड़ीवाल, श्री निर्मल झुनझुनवाला,मारवाड़ी युवा मंच की प्रान्तीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता बजाज, श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन', श्री नारायण अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, रा.संयुक्त मंत्री श्री संजय हरलालका। प्रान्तीय मंत्री श्री विनोद तोदी माइक पर भाषण देते हुए।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दो दिवसीय २६वां प्रादेशिक अधिवेशन 'जागृति–२००९' २१–२२ मार्च को महाराणा प्रताप भवन एवं श्री कृष्ण स्मारक भवन, पटना में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की पटना शाखा द्वारा आयोजित इस दो दिवसीय अधिवेशन के प्रथम दिन प्रादेशिक सभा, महिला सत्र, युवा सत्र एवं विषय निर्वाचिनी की बैठक हुई। बैठकों व सत्रों में दहेज, दिखावा व प्रदर्शन, भ्रूण हत्या आदि विषयों पर गहन चिंतन हुआ और इन सामाजिक बुराइयों को रोकने हेतु प्रयास करने पर जोर दिया।

कार्यक्रम के दूसरे दिन अ.भा.अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप मित्तल ने झण्डोत्तोलन किया। गुरुकुल के बच्चों द्वारा शंख ध्वनि तथा वैदिक मंत्रों के साथ समारोह की शुरूआत हुई। श्रीमती सुनीता जोश ने गणेश वन्दना, श्रीमती दयारानी अग्रवाल तथा पूनम मोर ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मंचस्थ अतिथियों को माल्यार्पण व पगड़ी पहनाने के बाद स्वागताध्यक्ष श्री दशरथ कुमार गुप्ता ने स्वागत वक्तव्य रखा। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

प्रान्तीय मंत्री श्री विनोद तोदी ने अपने प्रतिवेदन में कहा कि सम्मेलन एक महान संस्था है। अगर समर्पित लोग आगे जाकर निष्ठा के साथ कार्य करें तभी हमें लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। हमारी नीतियों तथा कार्यक्रमों को समाज के लोगों तक पहुंचाने के लिए जमीनी स्तर के लोगों को सम्मेलन से जोड़ा जाय। पटना नगर शाखा के अध्यक्ष श्री निर्मल झुनझुनवाला ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। बिहार प्रदेश के अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि सम्मेलन के कार्यक्षेत्र को और व्यापक बनाने हेतु चिंतन की आवश्यकता है।

इसके पश्चात् बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कमल नोपानी को निवर्तमान अध्यक्ष

बिहार अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न

हममें राजनैतिक इच्छा शक्ति का अभाव

-कमल नोपानी

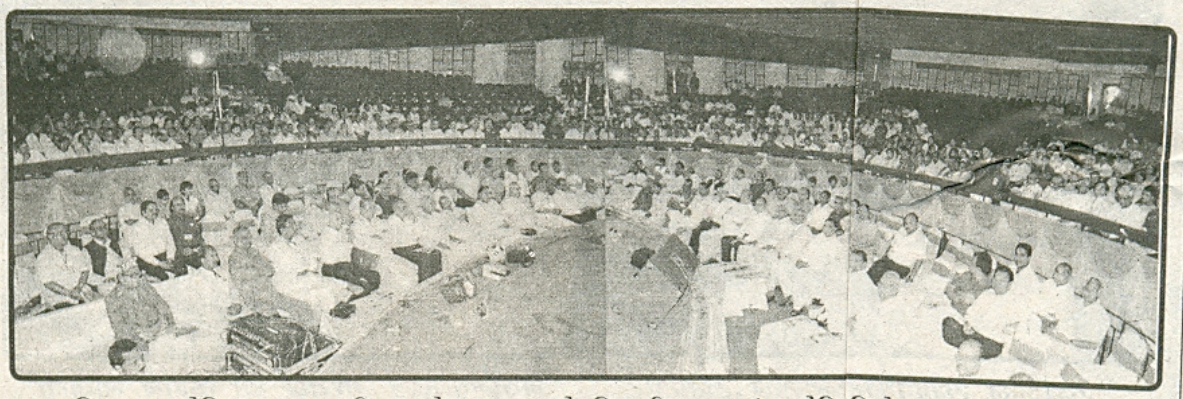

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दो दिवसीय २६वां प्रादेशिकधिवेशन 'जागृति-२००९ के अवसर पर पटना स्थित श्री कृष्ण स्मारक भवन में बिहरश आये प्रतिनिधिगण

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा उद्घाटनकर्ता श्री नन्दलाल रुँगटा ने अपने सधे हुए वक्तव्य में संगठन शक्ति, शिक्षा, चिकित्सा, समाज सुधार, समाज सेवा, भ्रूण हत्या आदि विषयों पर प्रकाश डाला एवं राजनैतिक चेतना पर कहा कि हमें लोगों को मतदान करने हेतु प्रेरित करना होगा। संगठन को मजबूत करने के लिए प्रत्येक मारवाड़ी परिवार के कम से कम एक व्यक्ति को सक्रिय रूप में सम्मेलन से जुड़ना होगा। सम्मेलन जैसी सामाजिक संस्थाओं को दान पर निर्भर न रहकर आत्मनिर्भर बनना होगा। आज हमारे पारिवारिक मूल्यों एवं संबंधों में निरंतर गिरावट आ रही है, इसे रोकने हेतु प्रयास करना होगा। - श्री नन्दलाल रुँगटा

श्री नथमल टिबड़ेवाल करतल ध्वनि के बीच माल्यार्पण, दुपट्टा एवं पगड़ी पहनायभार सौंपा।

नवनिर्वाचित अध्कमल नोपानी ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में कहा कि जनैतिक इच्छा शक्ति का अभाव है। सत्ता में हमारी भ नहीं है। हमें राजनीति में अपनी भागीदारी सुनिश्चितहोगी। हम सभी को अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज चाहिए। बिहार में १५६ शाखाएं हैं उनको शक्तिशालीहोगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बिहार बदल रहा है ज भी बदलेगा। श्री नोपानी ने नई कार्यकारिणी के नाी घोषणा की जिसमें श्री राजेश सिकरिया को महामंत किया।

विशिष्ट अतिथि पूर्व वित्तमंत्री श्री शंकर प्रसाद टेकड़ीवाल ने कहा ाड़ी समाज ही देश को दिशा दे सकता है। श्री रामपल नूतन ने कहा—हम काफी सेवा कार्य करते हैं, सबाल मिल जाते हैं। बावजूद इसके हमारी पहचान सकीं हुई है।

मारवाड़ी युवा प्रान्तीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता बजाज ने कहा कि युवा मंच के पदाधिकारी भी स्वयं को कार्यकर्ता समझौके पर श्री गणेश खेतड़ीवाल के

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

»» नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कमल नोपानी ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में कहा कि हममें राजनैतिक इच्छा शक्ति का अभाव है। सत्ता में हमारी भागीदारी नहीं है। हमें राजनीतिक में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। हम सभी को अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज करवाना चाहिए। ««

सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा

नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कमल नोपानी

प्रधान सम्पादकत्व में प्रकाशित 'कुछ अपनी कुछ पराई' नामक स्मारिका का विमोचन श्री रुँगटा ने किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप मित्तल ने अपने जोशपूर्ण वक्तव्य में कहा कि मारवाड़ी समाज देश की प्रत्येक राष्ट्रीय विपत्ति में सबसे पहले आगे आता है। लेकिन अब सिर्फ सेवा से हमारा गुजारा संभव नहीं है। हमारा वर्चस्व सत्ता में होना जरूरी है। संगठन को मजबूत करना होगा। 'लंच–मंच हमारा और राज तुम्हारा' अब नहीं चलेगा। हमें राजनीति में आने वाले प्रत्येक मारवाड़ी का तन–मन–धन से सहयोग करना चाहिए।

अंत में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा उद्घाटनकर्ता श्री नन्दलाल रुँगटा ने अपने सधे हुए वक्तव्य में संगठन शक्ति, शिक्षा, चिकित्सा, समाज सुधार, समाज सेवा, भ्रूण हत्या आदि विषयों पर प्रकाश डाला एवं राजनैतिक चेतना पर कहा कि हमें लोगों को मतदान करने हेतु प्रेरित करना होगा। संगठन को मजबूत करने के लिए प्रत्येक मारवाड़ी परिवार के कम से कम एक व्यक्ति को सक्रिय रूप में सम्मेलन से जुड़ना होगा। सम्मेलन जैसी सामाजिक संस्थाओं को दान पर निर्भर न रहकर आत्मनिर्भर बनना होगा। आज हमारे पारिवारिक मूल्यों एवं संबंधों में निरंतर गिरावट आ रही है, इसे रोकने हेतु प्रयास करना होगा। इसके अलावा राजस्थानी भाषा को बढ़ावा देने हेतु मारवाड़ी में बात करने पर उन्होंने जोर दिया। श्री रुँगटा ने कहा कि इस दिशा में पहल करते हुए हम साधारण बोलचाल की भाषा की एक शब्दावली पुस्तक निकालने का प्रयास कर रहे हैं। इस मौके पर प्रादेशिक सम्मेलन द्वारा विशिष्ट शाखाओं के प्रतिनिधियों, पदाधिकारियों एवं अतिथियों को मोमेंट एवं शॉल देकर सम्मानित किया गया। मंच पर अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार व श्री संजय हरलालका, श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल, बनारसी प्रसाद झुनझुनवाला, गोवर्धन नोपानी, डॉ. आर.के.मोदी, विश्वनाथ झुनझुनवाला, आर.के.मोदी, मोतीलाल खेतान, विमल जैन, पुष्करलाल अग्रवाल, श्री रमेश केजरीवाल, श्री जगदीश प्रसाद मोहनका, श्री बादल चंद अग्रवाल, श्री विजय कुमार किशोरपुरिया, श्री अशोक तुलस्यान, श्री ओम प्रकाश खेमका आदि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री महेश जालान ने किया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस सत्र का समापन हुआ। भोजन के पश्चात् प्रतिनिधि सत्र शुरू हुआ जिसमें बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नये पदाधिकारियों ने स्थान ग्रहण किया। सत्र में विषय निर्वाचिनी द्वारा स्वीकृत कई प्रस्तावों पर विस्तृत चर्चा हुई एवं कई प्रस्ताव पारित किये गये। सायं रंगारंग राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।◆

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

एक झलक

प्रान्तीय मंत्री श्री विनोद तोदी ने अपने प्रतिवेदन में कहा कि सम्मेलन एक महान संस्था है। अगर समर्पित लोग आगे जाकर निष्ठा के साथ कार्य करें तभी हमें लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। हमारी नीतियों तथा कार्यक्रमों को समाज के लोगों तक पहुंचाने के लिए जमीनी स्तर के लोगों को सम्मेलन से जोड़ा जाय।

- श्री विनोद तोदी

'लंच-मंच हमारा और राज तुम्हारा'

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप मित्तल ने अपने जोशपूर्ण वक्तव्य में कहा कि मारवाड़ी समाज देश की प्रत्येक राष्ट्रीय विपत्ति में सबसे पहले आगे आता है। लेकिन अब सिर्फ सेवा से हमारा गुजारा संभव नहीं है। हमारा वर्चस्व सत्ता में होना जरूरी है। संगठन को मजबूत करना होगा। 'लंच-मंच हमारा और राज तुम्हारा' अब नहीं चलेगा। हमें राजनीति में आने वाले प्रत्येक मारवाड़ी का तन-मन-धन से सहयोग करना चाहिए।

- श्री प्रदीप मित्तल

स्मारिका का विमोचन

इस मौके पर श्री गणेश खेतड़ीवाल के प्रधान सम्पादकत्व में प्रकाशित 'कुछ अपनी कुछ पराई' नामक स्मारिका का विमोचन श्री नन्द लाल रुँगटा ने किया। श्री महेश जालान साथ देते हुए।

वैदिक मंत्रों से शुरूआत

गुरुकुल के बच्चों द्वारा शंख ध्वनि तथा वैदिक मंत्रों के साथ समारोह की शुरूआत हुई।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

सम्मान समारोह

श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन'

श्री नारायण अग्रवाल

श्री शंकर प्रसाद टेकड़ीवाल

श्री रमेश केजरीवाल

सम्मान समारोह की एक झलक

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

महिला सत्र

▸▸ बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दो दिवसीय २६वां प्रादेशिक अधिवेशन 'जागृति-२००९' २१-२२ मार्च को महाराणा प्रताप भवन एवं श्री कृष्ण स्मारक भवन, पटना में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की पटना शाखा द्वारा आयोजित इस दो दिवसीय अधिवेशन के प्रथम दिन प्रादेशिक सभा, महिला सत्र, युवा सत्र एवं विषय निर्वाचिनी की बैठक हुई। बैठकों व सत्रों में दहेज, दिखावा व प्रदर्शन, भ्रूण हत्या आदि विषयों पर गहन चिंतन हुआ और इन सामाजिक बुराइयों को रोकने हेतु प्रयास करने पर जोर दिया।◂◂

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-७०० ००७

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति 2008–2010

NATIONAL PRESIDENT : SRI NANDLAL RUNGTA

NATIONAL VICE PRESIDENT
SRI HARI PRASAD KANORIA
SRI RAJ K. PUROHIT
SRI GANESH PRASAD KANDOI
SRI BADRI PD. BHIMSARIA
SRI OM PRAKASH KHANDELWAL
SRI RAMVILASH SABOO

NATIONAL GENERAL SECRETARY
SRI RAM AWATAR PODDAR

JOINT GENERAL SECRETARY
SRI OMPRAKASH PODDAR
SRI SANJAY HARLALKA

NATIONAL TREASURER
SRI ATMARAM SANTHOLIA

EX-NATIONAL PRESIDENTS & SECRETARIES (EX-OFFICIO) :
SRI NAND KISHORE JALAN (*Ex-National President*)
SRI HARI SHANKAR SINGHANIA (*Ex-National President*)
SRI HANUMAN PRASAD SARAWAGI (*Ex-National President*)
SRI MOHAN LAL TULSIAN (*Ex-National President*)
SRI SITA RAM SHARMA (*Ex-National President*)
SRI RATAN LAL SHAH (*Ex-National General Secretary*)
SRI BHANI RAM SUREKA (*Ex-National General Secretary*)

EXECUTIVE COMMITTEE-MEMBERS :

SRI ARUN GUPTA
SRI DWARKA PRASAD DABRIWAL
SRI BALRAM SULTANIA
SRI GEETESH SHARMA
SRI BIRENDRA PRAKASH DHOKA
SRI CHIRANJEE LAL AGARWAL
DR. JAI PRAKASH SHANKAR LAL
SRI SANTOSH KUMAR SARAF
SRI RAJENDRA KHANDELWAL
SRI SHYAMLAL DOKANIA
SRI MAUJI RAM JAIN
SRI RAM PAL AGARWAL "NUTAN"
SRI ATUL CHURIWAL
SRI PRAHLAD RAI AGARWAL
SRI SAJJAN BHAJANKA
SRI BISHWAMBHAR DAYAL SUREKA
SRI BISHWANATH MAROTHIA
SRI BANSHI LAL BAHETI
SRI BABU LAL DHANANIA
SRI SATISH DEORAH
SRI NARAYAN JAIN
SRI NAWAL JOSHI
SRI SANTOSH KUMAR AGARWAL 'SINGHANIA'
SRI SUBIR PODDAR
SRI HARI PRASAD BUDHIA
SRI SHRAWAN TODI
SRI MAMRAJ AGARWAL
SRI VISHWANATH SINGHANIA
SRI JUGAL KISHORE JAITHALIA
SRI BASANT MITTAL
SRI BAL KRISHNA MAHESHWARI
SRI LOKNATH DOKANIA
SRI OMKARMAL AGARWAL
SRI PRAKASH CHAND CHANDALIA
SRI RAVINDRA KUMAR LADIA
SRI SHAMBHU CHOUDHARY
SRI SADHU RAM BANSAL

PROVINCIAL PRESIDENTS & SECRETARIES (EX-OFFICIO) :

SRI RAMESH KUMAR BANG PRESIDENT, ANDHRA PRADESH	SRI NARESH CHANDRA VIJAYVARGIYA SECRETARY, ANDHRA PRADESH
SRI KAMAL NOPANI PRESIDENT, BIHAR	SRI RAJESH SIKRIYA SECRETARY, BIHAR
SRI BHAGCHAND PODDAR PRESIDENT, JHARKHAND	SRI DHARAM CHAND JAIN 'RARA' SECRETARY, JHARKHAND
SRI ARUN KUMAR AGARWAL PRESIDENT, MADHYA PRADESH	SRI RAMESH KUMAR GARG SECRETARY, MADHYA PRADESH
SRI RAMESH CH. GOPIKISHAN BANG PRESIDENT, MAHARASHTRA	SRI LALIT SAKALCHAND GANDHI SECRETARY, MAHARASHTRA
DR. SHYAM SUNDER HARLALKA PRESIDENT, PURVOTTAR	SHRI OM PRAKASH CHOWDHARY SECRETARY, PURVOTTAR
SRI KAILASH MULL DUGAR PRESIDENT, TAMILNADU	SRI VIJAY KUMAR GOYAL SECRETARY, TAMILNADU
SRI VISHWANATH SULTANIA PRESIDENT, WEST BENGAL	SRI RAMGOPAL BAGLA SECRETARY, WEST BENGAL
SRI SOM PRAKASH GOENKA PRESIDENT, UTTAR PRADESH	SRI GOPAL SUTWALA SECRETARY, UTTAR PRADESH
SRI PANNA LAL BAID PRESIDENT, DELHI	SRI PAWAN KUMAR GOENKA SECRETARY, DELHI
SRI SURENDRA LATH PRESIDENT, UTKAL	SRI VIJAY KEDIA SECRETARY, UTKAL
SRI B. L. JAIN PRESIDENT, CHHATTISGARH	SRI HARI SHANKAR SHARMA SECRETARY, CHHATTISGARH

NATIONAL PRESIDENT & SECRETARY (EX-OFFICIO) : (YUVA MANCH & MAHILA SAMMELLAN)

SRI JITENDRA KR. GUPTA
NATIONAL PRESIDENT, AIMY MUNCH

SRI PURUSHOTTAM AGARWAL
NATIONAL GENERAL SECRETARY, AIMY MUNCH

SMT. PUSHPA KHAITAN
NATIONAL PRESIDENT, AIMM SAMMELLAN

SMT. PUSHPA AGARWAL
NATIONAL GENERAL SERECTARY, AIMM SAMMELLAN

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-७०० ००७

स्थायी समिति 2008–2010

NATIONAL PRESIDENT : SRI NANDLAL RUNGTA

NATIONAL VICE PRESIDENT
SRI HARI PRASAD KANORIA
SRI RAJ K. PUROHIT
SRI GANESH PRASAD KANDOI
SRI BADRI PD. BHIMSARIA
SRI OM PRAKASH KHANDELWAL
SRI RAMVILASH SABOO

NATIONAL GENERAL SECRETARY
SRI RAM AWATAR PODDAR

JOINT GENERAL SECRETARY
SRI OMPRAKASH PODDAR
SRI SANJAY HARLALKA

NATIONAL TREASURER
SRI ATMARAM SANTHOLIA

SUB COMMITTEE PRESIDENTS

SRI BISHWANTH BHUWALKA
PRESIDENT MEMBERSHIP SUB COMM.

SRI DWARKA PRASAD DABRIWAL
PRESIDENT BUILDING SUB-COMM.

SRI JUGAL KISHORE JETHALIA
"ADVOCATE" PRESIDENT RAJNAITIK SUB-COMM.

SRI PRAHLAD RAI AGARWAL
PRESIDENT HIGHER EDUCATION SUB-COMM.

SRI RATAN LAL SHAH
PRESIDENT RAJASTHANI BHASHA

SRI NANDKISHORE JALAN
PRESIDENT ADVISOR SUB-COMM.

MEMBERS

SRI VISHWANTH SARAF

SRI CHAMPALAL SARAWGI

SRI BANWARI LAL SOTI

SRI DILIP KUMAR GOENKA

SRI VISHWANATH CHANDAK

SRI JAIGOVIND INDORIA

SRI GOVINDRAM AGARWAL (DHANUWALA)

SRI ARVIND BIYANI

SRI OM LADIA

SRI MUKUND RATHI

SRI OMPRAKASH AGARWAL

SRI GOPI RAM DHUWALIA

SRI GOVIND PD. SHARMA

SRI KRISHNA KR. DOKANIA

SRI KAILASH PATI TODI

SRI PREM CHAND SURELIA "ADVOCATE"

SRI RAMNIWAS SHARMA (CHOTIA)

SRI VIJAY KR. GUJARWASIA

SRI PRADIP DHEDIA

SRI SUBHASH MURARKA

।। श्री नमस्कार महामंत्र ।।

णमो अरिहंताणं।
णमो सिद्धाणं।
णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं।
णमो लोए सव्वसाहूणं।
श्री अरिहंत भगवान को नमस्कार हो।
श्री सिद्ध भगवान को नमस्कार हो।
श्री आचार्य महाराज को नमस्कार हो।
श्री उपाध्याय महाराज को नमस्कार हो।
लोक में सब साधुओं को नमस्कार हो।

जिन्होंने राग, द्वेषरूपी शत्रुओं को जीत लिया है, उन्हें अरिहंत कहते हैं। मोक्ष में विराजित सिद्ध परमात्मा कहलाते हैं, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका इन चारों तीर्थों के धार्मिक नेता आचार्य होते हैं। स्वमत और परमत के जानकार, धर्मशास्त्र पढ़ाने वाले उपाध्यक्ष कहलाते हैं। आत्म कल्याण की साधना करने वाले साधु होते हैं।

महामंत्र महिमा

ऐसो पंच नमुक्कारो
सव्वपावप्पणासणों।
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढ़मं हवई मंगलं।।
यह पांच पदों में नमस्कार,
सब पापों का नाश करने वाला है,
संसार के सब मंगलों में यह
पहला श्रेष्ठ मंगल है।

मंगलभावना

शिवमस्तु सर्वजगत:
परहितनिरता भवन्तु भूतगणा:।
दोषा प्रयान्तु नाशं,
सर्वत्र सुखी भवतु लोका।।
सकल विश्व का जय मंगल हो,
ऐसी भावना बनी रहे।
अमित परहित करने को मन,
सदैव तत्पर बना रहे।।
सब जीवों के दोष दूर हो
पवित्र कामना उर उल्लसे।
सुख शान्ति सब जीवों को हो,
प्रसन्नता जनमन विलसे
नाथ निरंजन भवभय भजन
तीन भुवन के हे स्वामी।
वीतराग सुखसागर है,
भगवान महावीर गुणधामी।।

प्रभु प्रार्थना

हे प्रभो आनन्द दाता,
ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे अवगुणों को,
दूर हमसे कीजिये।
लीजिये हमको शरण में,
हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीरव्रत धारी बनें।
प्रेम से हम गुरूजनों की,
नित्य ही सेवा करें।
सत्य बोलें झूठ त्यागें,
मेल आपस में सदा करें।
निन्दा किसी की हम किसी से,
भूल कर भी न करें।
धैर्य बुद्धि मन लगा कर,
प्रभु गुण गाया करें।

प्रभु प्रार्थना

हे प्रभु ऐसा मन कर दो

मुदित रहे प्रत्येक दशा में, तोष सुधारस पावें।
जग भोगों की चकाचौंध में, भूल भटक नहिं जावें।
राग द्वेष ईर्ष्या मद ममता, सपनेहिं इन्हें न ध्यावें।
करे निरंतर ध्यान आपका, प्रेम से गुण गान गावें।
अणु अणु और परमाणु में, देखें रूप तुम्हारा।
सर्व समर्पण होय आपमे, रहे न अंश हमारा।
उत्पीड़क न बने किसी को, हो विनम्र मृदुभाषी।
सेवा धर्म परायण होवे, तज कर आश पिशाची।
बना है यह तन भव तरनेको, डूबत है मझधारा।
कीजे कृपा सफल हो जीवन, दे दो जरा सहारा।

हे प्रभु ऐसा मन कर दो.....

ॐ असतो मा सद्गमय:। तमसो मा ज्योतिर्गमय:।।
मृत्योर्मा अमृत गमय:। ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।।

प्रभु चांदनी जैसी शीतलता, मेरे अन्तर में भर देना।
रोशनी की भी चाह जगी है, पूरी यह कर देना।
दिल की तमन्ना है प्रभु से, माफ मुझे कर देना।
मेरे दुर्गुणों का अन्धेरा, कृपा करके प्रभु हर लेना।

बांझ

रमा देवी ने अपनी बहू सुनैना पर बरसते हुए कहा 'तूने मेरे बेटे की जिंदगी खराब कर दी कलंकनी' शादी को सात साल बीत गए लेकिन अब तक मुझे कोई पोता नहीं दे सकी। पता नहीं किस अशुभ घड़ी में पैदा हुई थी। जा निकल इस घर से। ऐसी बांझ औरत की हमें जरूरत नहीं। मैं अपने इकलौते बेटे रविनेश का ब्याह कहीं और कर दूंगी।

सुनैना की सास ने धक्के व गंदी गालियां देकर उसे घर से बाहर निकाल दिया। उसका पति भी अपनी मां का कहा मान अपनी पत्नी को मारता पीटता था।

अपने पति व सास की यातना–प्रताड़ना से दुःखी हो सुनैना अपने गरीब पिता रामदयाल के घर आ गयी। तथा कभी भी ससुराल में लौटकर न जाने की कसम खा ली। सुनैना बड़ी भोली–भाली, सुशील एवं सुसंस्कृत लड़की थी। उसके अभिभावकों ने उसे अच्छे संस्कार दिए थे। उसने सास व पति के दुःखों से पीड़ित होकर कभी उनका विरोध नहीं किया, चुपचाप अपमान एवं मार सहती रही।

सुनैना का पति रविनेश जो पढ़ा लिखा था अपनी मां के बहकावे में आकर दूसरी शादी के लिए राजी हुआ।

सुनैना के पिता ने भी सुनैना को मनाकर दूसरी शादी के लिए राजी कर लिया। करीबन दो वर्ष के बाद एक शादी के समारोह में सुनैना की पूर्व सास रमादेवी और पूर्व पति रविनेश की सुनैना से अचानक भेंट हो गयी। सुनैना की गोद में एक नन्हा–मुन्ना प्यारा सा बच्चा देख दोनों हैरान रह गए। नजरें मिलीं तो सुनैना ने उस पर कटाक्ष कसते हुए मुस्कुराकर कहा, "मेरा अपना बच्चा है। बड़ा प्यारा है न।"

अरे हां, सुना था आपने अपने इकलौते लाडले का ब्याह दूसरी जगह करवा दिया था। अब तो आपको लल्ला मिल गया होगा? वे दोनों सुनैना के सवाल का जवाब दिए बिना ही आत्मग्लानि के साथ गर्दन झुकाकर आगे बढ़ गए क्योंकि दूसरी शादी के बाद भी रमा देवी पोते का मुंह देखने को तरस गयी थी।

- डॉ. पी. आर. बासुदेवन 'शेष'

जिनवाणी

सुख का राज मार्ग है केवल, आत्म–बोध निजपन का ज्ञान।
अतः और कुछ नहीं चाहिये, एक चाहिये अपना भान।
और न कोई दुःख मूल है दुःख मूल है निज अज्ञान।
दुःख मुक्त हो सुख पाना तो, निज स्वरूप पर रखिए ध्यान।
आत्मज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान।
विश्वशांति का मूल है, वीतराग विज्ञान।।

जिनेश्वर भगवान का सच्चा सेवक कैसा होता है?

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निःस्पृह हो उपदेश दिया।।
बुद्ध वीर जिन, हरिहर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहे।
भक्ति–भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहे।
विषयों की आशा नहीं जिनको, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज पर हित के साधन में जो निश–दिन तत्पर रहते हैं।।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी न कहा करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्यव्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ।
मैत्री भाव परस्पर मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन–दुःखी जीवों पर मेरा, उर से करूणा स्रोत बहे।।

दुःख में दीन न बनो, सुख में लीन न बनो।
राग के रोगी न बनो, द्वेष के भोगी न बनो।
कर्त्तव्य में कायर न बनो, कर्म के कैदी न बनो।
आत्मा के आराधक बनो, समता के साधक बनो।
कषायों के काल बनो, जिनेश्वर के दास बनो।

पाने के पहले कुछ देना सीखो

एक सुविख्यात संत थे। उनके विषय में प्रसिद्ध था कि उनके पास जाकर आशीर्वाद लेने से मनोकामना पूरी हो जाती है। एक स्त्री संतान प्राप्ति की इच्छा से संत के पास आई और बोली–"सब कुछ है मेरे पास, केवल पुत्र ही नहीं है। मुझे आशीर्वाद दीजिए ताकि मेरा आंगन भी हरा–भरा हो।"

संत ने उसे दो मुट्ठी भुने हुए चने दिए और कहा–"बाहर बैठकर ये चने खा, जब बुलाऊँ तब आना।"

स्त्री आंगन में बैठकर चने खाने लगी। वहाँ कई बच्चे खेल रहे थे। स्त्री को खाता हुआ देखकर ललचायी आंखों से उसकी ओर देखने लगे। स्त्री को यह अच्छा नहीं लगा। उसने एक बच्चे को डांटते हुए कहा–"क्या है रे?" "हमें भी चने दो" एक बालक बोल पड़ा। "भाग यहां से" स्त्री ने दुत्कार कर कहा। मगर बालक खड़े रहे। स्त्री ने एक बालक का हाथ पकड़कर मरोड़ दिया तो बालक चीख उठा। चीख सुनकर संत बाहर आए। उन्होंने स्त्री से पूछा–"क्या हुआ?" स्त्री चिढ़कर बोली–"होता क्या? चने मांग रहे हैं और तंग कर रहे हैं।"

संत स्थिति समझ गए और बोले–"माँ, जब तुम मुफ्त के चनों में से चार दाने इन अनाथ बालकों को नहीं दे सकीं तो भगवान तुम्हें हाड़–मांस का बच्चा कैसे देगा? पाने से पहले देना सीखो। जाओ, पहले देने की भावना मन में पैदा करो, फिर कुछ पाने की लालसा करना।"

आत्मा ही शाश्वत सत्य है

आत्मा अमर है, शाश्वत सत्य है, नित्य है, स्वतंत्र है, स्वयं में परिपूर्ण है, ज्ञान गुण वाला चैतन्य स्वरुप है, शुद्ध है, बुद्ध है, पौद्गलिक ब्रह्माण्ड से सर्वथा भिन्न ब्रह्मस्वरूप है, जानना और देखना सहज स्वभाव है, वही आत्मा का उपयोग है। उपयोग को सही दिशा में मोड़ना सद् पुरूषार्थ है, जैसा उपयोग व आचरण वैसा कर्म बंध का कारण व निमित्त उपस्थित हो जाता है। आत्मा स्वयं कर्म का कर्ता भोक्ता व कर्म से मुक्त होने का सामर्थ्य रखने वाला स्वतंत्र द्रव्य है। आत्मा अनादिकाल से कर्माधीन रहते हुए व कर्म के फल भोगते हुये जन्म–मरण को धारण करता रहता है, जन्म–मरण से मुक्त होना तभी संभव है जब आत्मा सर्वथा कर्ममुक्त हो जाती है अत: सर्वप्रथम आत्मा में रहा हुआ अनादिकाल का मिथ्यात्व यानी मैं और मेरा कर्तव्य बुद्धि का देहाभिमान से मुक्त होना पड़ेगा। अनासक्त भाव से राग द्वेष रहित जीवन के घटनाक्रम को साक्षी रूप में जानना व देखना होगा। सहज स्वभाव में आस्था रखनी होगी, वही धर्म का मूल आधार है।

वैसे आत्मा अरूपी है पर ज्ञान गुण और चैतन्य स्वभाव से स्वरूपी भी है, जैसे हवा अरूपी है जो देखी नहीं जाती परन्तु शीतलता के गुण से स्वरूपी बन जाती है, जिसका अनुभव किया जाता है, अत: आत्मा अनुभव गम्य है जिसका अस्तित्व यथावत् मानना सम्यक् दर्शन हैं, जहाँ सम्यक् दर्शन है, वहां सम्यक् ज्ञान है। सम्यक दर्शन अर्थात् यथार्थ को यथावत्, यही आत्मदर्शन है। आत्मदर्शन ही मोक्ष मार्ग का परम हेतु है जहाँ मोक्ष का लक्ष्य है, वहां सत्य का पक्ष ही मान्य है, वहीं सच्चा धर्म है।

सबसे बड़ा आश्चर्य

वनमें धर्मराज युधिष्ठिर के चारों भाई सरोवर के सामने मृतक के समान पड़े थे, प्यास तथा भ्रातृशोक से व्याकुल युधिष्ठिर के सम्मुख एक यक्ष खड़ा था। यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिये बिना जल पीने के प्रयत्न में ही भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव की यह दशा हुई थी। युधिष्ठिर ने यक्ष को उसके प्रश्नों का उत्तर देना स्वीकार कर लिया था। यक्ष प्रश्न करता जा रहा था, युधिष्ठिरजी उसे धैर्यपूर्वक उत्तर दे रहे थे, यक्ष के अन्तिम प्रश्नों में से एक प्रश्न था–संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तीह यमालयम्।
शेषा: स्थिरत्वमिच्छीन्ति किमाश्चर्यमत: परम्।।

सत्य–प्रतिदिन प्राणी यमलोक जा रहे हैं। (सब देख रहे हैं कि प्रतिदिन उनके आसपास लोग जा रहे हैं) परन्तु दर्शक बने हुए लोग स्थिर बने रहना चाहते हैं, इससे बड़ा आश्चर्य संसार में और क्या होगा। यह उत्तर था धर्मराज युधिष्ठिर का।

अहंकार अज्ञान का सूचक

अहंकार अज्ञान का ही दूसरा नाम है। अहंकार का बीज अति सूक्ष्म होता है। जिसे बढ़ने दिया गया तो वटवृक्ष बन कर आत्मा के सभी गुणों पर पर्दा पड़ जाएगा। वहीं मिथ्या दृष्टि है जो कर्ता बुद्धि यानी कर्त्तव्य का अभिमान उत्पन्न करता है। आत्मा कर्त्तव्य से परे, अहंकार मन बुद्धि व शरीर को साक्षी भाव से जानता है, यही आत्म विज्ञान है।

आत्मा

जगत में तथ्य व सत्य दो ही मूल वस्तु है, जीव व अजीव, जीव अथवा आत्मा, शुद्ध चैतन्य स्वरूप स्वतंत्र द्रव्य है, जो कर्म रूपी मुद्गल के संयोग से शरीर धारण किया हुआ है। आत्मा की अपने चैतन्य स्वभाव में निरन्तर पर्याय पलटती रहती है। आत्मा व पर्याय, पानी व लहरों की तरह अभिन्न है तथा द्रव्य रूप में सदा शाश्वत है, आत्म का अस्तित्व आत्मा में ही विद्यमान है जो अनुभव गम्य है। पदार्थ व मुद्गल जो आत्मा से सर्वथा भिन्न है स्वभाव से निरन्तर परिवर्तनशील है।

जो पदार्थ टूटता–फूटता है वही नव निर्माण को धारण करता है। यह परिवर्तन की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती परन्तु टूटने–फूटने से जो परे है वह आत्मा है। आत्मा अमर है। शाश्वत चैतन्य स्वरूप है इस प्रकार की श्रद्धा होना सम्यक् दर्शन है।

शुद्धात्मा दर्शन बिन कर्म न छूटे कोय।
ते कारण शुद्धात्मा दर्शन करें, स्थिर होय।।
आत्म अनुभव तीर से, मिटे मोह अंधकार।
आत्म रूप में जल हले, तस भव अन्त अपार।।

जिस प्रकार हर कली में फूल का अरमान छिपा बैठा हुआ है उसी प्रकार हर मानव में भगवान छिपा बैठा है परन्तु आश्चर्य है कि अज्ञानवश मानव प्राय: स्व स्वभाव को यानी स्वयंको भूल कर पर चिन्ता, परचर्चा, परचर्या व परपूजा में ही सदा लीन रहता है। ज्ञानियों की दृष्टि में स्व के सन्मुख हुए बिना आत्म कल्याण संभव नहीं है। आत्मा का अस्तित्व ज्ञानियों के ज्ञान में सर्वथा सिद्ध है। वही मान्य है।

जहाँ कषाय नी उपशान्तता, मात्र मोक्ष अभिलाष।
भवे खेद, प्राणी दया तहां आत्मार्थ निवास।।
जिन सो ही आत्मा, अन्य ते कर्म।
कर्म कटे सो जिनवाणी, यही धर्म का मर्म।।

महापुरुषों की दृष्टि में

गुण न हो तो रूप व्यर्थ है। नम्रता न हो तो शिक्षा व्यर्थ है।।
सदुपयोग न हो तो धन व्यर्थ है। होश न हो तो जोश व्यर्थ है।।
भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है। साहस न हो तो शस्त्र व्यर्थ है।।
बुद्धि न हो तो बल व्यर्थ है। करूणा न हो तो जीवन व्यर्थ है।।
सम्यक् ज्ञान न हो तो मानव भव व्यर्थ है।

जीवन क्या है?

जीव और अजीव का संयुक्त रूप से संसार परिभ्रमण का नाम जीवन है, जीवात्मा अनादिकाल से कर्माधीन है व चौरासी लाख जीवयोनि में अनंत जन्म–मरण के चक्र में से गुजरते हुए महत्त्वपूर्ण मानव भव के पड़ाव तक पहुँच पाया है, जहाँ मन व बुद्धि भी उपलब्ध है, साथ में प्रारब्ध अर्थात् पूर्व कृत कर्म के संस्कार भी रहे हुए हैं। जीवन को सफल बनाने में अथवा संवारने में पुरुषार्थ के साथ विवेक युक्त बुद्धि सहायक होती है।

मानव भव में ही विवेक बुद्धि उपलब्ध है जो अन्य जीवों के पास नहीं होती अत: मानव भव के जीवन को उपयोगी व सार्थक बनाने की आवश्यकता है। मानव भव में ही आत्म विकास एवं आत्म कल्याण की साधना संभव है अत: जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर समझ पूर्वक पुरूषार्थ करते रहना आवश्यक है जिससे वर्तमान जीवन भी सुख शान्ति पूर्वक व्यतीत हो, साथ ही परलोक भी सुधर जाय हिंसा का त्याग, नीति न्याय का अनुसरण व शुद्ध एवं सात्विक जीवन जीना ही मानव भव का परम लक्ष्य होना चाहिए, अन्यथा लक्ष्य विहीन जीवन बिन ब्रेक की गाड़ी की तरह अथवा कोल्हू के बैल की तरह घूमते रहने से जीवन निरर्थक बन जाता है।

जीवन की विभिन्न अवस्थाएं होती है, प्रारंभिक अवस्था शिक्षा प्राप्त कर ज्ञानोपार्जन के लिए उपयुक्त है अत: ज्ञान अर्जित करने में सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। ज्ञान ही जीवन का सच्चा साथी है। ज्ञान जीवन का प्रकाश है जहाँ ठोकर खाने की संभावनाएं कम होती है व सन्मार्ग की ओर बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होती है, वैसे जीवन क्षणिक व अस्थाई है अत: बिना किसी प्रसाद के कर्त्तव्य निर्वाह करते रहना व जीवन को धर्ममय बना देना चाहिये। धर्म परायण व्यक्ति न दु:ख में दीन होगा न सुख में लीन होगा बल्कि समभाव से धैर्यपूर्वक प्रगति पथ पर आगे बढ़ने का प्रयास करेगा इसी में जीवन की सार्थकता निहित है।

जीवन में समय अति मूल्यवान होता है अत: समय पर किया हुआ काम व अवसर पर कही हुई बात ही महत्वपूर्ण होती है अत: सदा याद रहे–बीता समय फिर हाथ आता नहीं, खोया हुआ अवसर दुबारा प्राप्त होता नहीं, जो समय का सही मूल्यांकन कर सकता है वही जीवन के सही मूल्य को समझ कर जीवन को सार्थक बना सकता है, संसार अच्छा है नहीं परन्तु अच्छा लगता है जो मिथ्यात्वी की मान्यता है।

संसार विश्वास करने योग्य नहीं है, समझने योग्य है।

प्रतिक्षण बदलने वाले अनित्य संसार पर विश्वास करना अज्ञान है। संसार में जो प्राप्त होता है क्षण भंगुर है, उसमें आसक्ति कैसी? मिले हुए को अपना नहीं मानना अनासक्त भाव है, वही मुक्ति का मार्ग है। संतोष से काम, क्रोध और लोभ पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। संतोष में ही जीने की कला है–संतोषी सदा सुखी रह सकता है।

सभी अपने–अपने ढ़ंग से जीवन में आचरण कर उसे सफल बनाने की पूरी चेष्टा करते हैं। सभी का ध्येय जीवन में परमानन्द की प्राप्ति करना होता है, किन्तु कुछ विरले व्यक्ति ही अपनी वासनाओं व इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर जीवन को आनन्दमय बना पाते हैं, ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'' अपना कर ही जीवन को आनन्दमय बनाया जा सकता है। जीवन की विषम परिस्थितियों में स्वर्गीय राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के निम्न विचार बहुत ही प्रेरणादायक है :–

साथी यह कर्त्तव्यजगत है, मानव बनकर जीना होगा।
अपने सुख–दु:ख के प्यालों को, जैसे भी हो पीना होगा।
तुम ही तो जन्म–मरण के कर्ता, सुख–दु:ख तो होते रहते हैं।
हंसते–रोते, बढ़ते जाओ, इसको ही जीवन कहते हैं।।

स्वाभिमान व अहं भाव

प्रत्येक व्यक्ति को स्वाभिमान प्रिय है, वह चाहता है कि उसके आत्मसम्मान को ठेस नहीं पहुँचे, ऐसा तभी संभव है जबकि दूसरों के आत्मसम्मान का भी ध्यान रखा जाये। आत्मसम्मान अहं भाव से सर्वथा भिन्न है आत्मसम्मान को ठेस तब पहुँचती है जब कोई अपनी इज्जत से खिलवाड़ करता है, यानि न कहने जैसा आवेश में कह देता है अथवा न करने जैसी कोई बात हो जाती है तब तकरार की नौबत आ जाती है व एक दूसरे पर हावी होने का प्रयास किया जाता है अथवा एक दूसरे को नीचा दिखाने का, जिसे कहा जाता है आत्मसम्मान की लड़ाई, जो वस्तु स्थिति का सही जायजा लेने पर अथवा भूल का अहसास होने पर पश्चाताप के साथ समाप्त की जा सकती है, परन्तु अहं भाव से व्यक्तिगत स्वार्थ अथवा ईर्ष्या द्वेष की उत्पत्ति होती है जो लम्बे समय तक एक दूसरे के लिये ईर्ष्यावश नुकसान की कामना करते हैं जिसमें अपनी ही आत्मा का अहित है न कि सामने वाले का। अहं भाव अहंकार को जन्म देता है जो विवेक पर पर्दा डालने का काम करता है जिस से कई बार सही निर्णय कर पाना कठिन हो जाता है अत: अहं भाव अथवा अहंकार सर्वथा हानिकारक है जो आत्म उत्थान व व्यवहारिक अभ्युदय में भी बाधक है जहां आत्म सम्मान का सवाल पैदा होता है वहां भी अधिक उलझने के बजाय समस्या को सरलता से समझने का प्रयास कर विवाद को समाप्त कर देना ही उपयुक्त है।

सत्य ही शाश्वत तथ्य है

सत्य को समझ पाने में विलम्ब हो सकता है पर सत्य छुप नहीं सकता वह तो आत्मसाक्षी के दर्पण में अवश्य देखा जा सकता है यदि निष्पक्ष दृष्टिकोण रखा जाये तो, अन्यथा जगत की भाषा में जैसा कि कहा जाता है "रंगी को नारंगी कहे, तत्त्वमाल को खोया, चलती को गाड़ी कहे देख कबीरा रोया" इस प्रकार जगत की विपरीत भाषा जैसे रंगी हुई को नारंगी व तत्त्व माल को खोवा कहने मात्र से वस्तु का स्वरूप नहीं बदल जाता वैसे ही 'सांच को आंच नहीं' अथवा "सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से, खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से" अत: सही व निष्पक्ष चिंतन करने पर दूध का दूध व पानी का पानी साफ नजर आने लगेगा अर्थात सत्य की खोज में धीरज रखने की आवश्यकता है, जैसा कि सर्व विदित है वर्तमान में न्यायपालिका से न्याय पाने में इतना विलम्ब हो जाता है कि कई बार निराश व हताश होना पड़ता है, फिर भी न्यायपालिका पर विश्वास किया जाता है तथा धीरज रखने वाले को न्याय मिलता भी है। यह स्थिति सत्य की खोज में भी उत्पन्न हो सकती है परन्तु झूठ का नकाब अधिक समय तक नहीं टिक पाता, तर्क वितर्क से सत्य को मिथ्या नहीं ठहराया जा सकता।

अंततोगत्वा 'सत्यमेव जयते' सत्य की विजय अवश्य होती है। यदि आत्म विश्वास के साथ प्रतिक्षा की जाती है तो सत्य व न्याय कभी लुप्त नहीं होगा बल्कि अवश्य उजागर होकर रहेगा अत: सत्य का साथ कभी नहीं छोड़ें। जहां सत्य है वहाँ लक्ष्मी का भी निवास होता है यदि कभी अशुभ कर्मोदय से विपरीत परिस्थिति बन भी जाती है तो भी धीरज रखने की आवश्यकता है। महापुरुषों का अनुभव यही कहता है कि–

सत् मत छोड़ो साहिबा, सत् छोड़ियो पत जाय।
सत् की बांधी लक्ष्मी फिर मिलेगी आय।।

मंगल वचन

जीवन है अनमोल, इसे जो व्यर्थ गंवाया करते हैं।
अपना कर्त्तव्य भुलाकर वे, पीछे पछताया करते हैं।
जो धर्म निभाते हैं अपना, वे सदा सुख पाया करते हैं।
सच्चे अर्थो में जीवन को, वे सफल बनाया करते हैं।
सहज मिले सो दूध बराबर, मांग लिया सो पानी।
खींच लिया सो खून बराबर, गोरख तेरी वाणी।
।। रहते नहीं सब दिन एक समान, कभी धूप कभी छांव, यही विधि विधान ।।

बापू का प्रिय भजन

वैष्णव जन तो तेने कहीजे जे पीर पराई जाणे रे,
परदु:खे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे,
सकल लोकमां सहुने वन्दे, निन्दा न करे केनी रे,
वाचकाछ मन निश्चल राखे, धन–धन जननी तेनी रे,
समदृष्टि राखी तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे,
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे,
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे,
रामनामशुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना मनमां रे,
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे,
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां कुल एकोतेरे तार्या रे,

जीवन में सफलता के बीस सूत्र :-

१. मस्तिष्क को चिंता से मुक्त रखें।
२. मन को घृणा से दूर रखें।
३. कम खाने वाले का शरीर स्वस्थ रहता है। गम खाने वाले का मन स्वस्थ रहता है।
४. आमिष भोजन व नशीले पदार्थो का सेवन न करे। नियमित सात्विक आहार शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखता है।
५. अश्लील साहित्य न पढ़ें। अश्लील फिल्में न देखें।
६. सादा जीवन, उच्च विचार रखें।
७. कम स्वीकारें, ज्यादा देवें (अपरिग्रही बनें)
८. लोभ, पाप का बाप है, तृष्णा का त्याग करें।
९. अपने अवगुण को देखें। दूसरों के गुणों को देखें।
१०. जैसा व्यवहार दूसरें से चाहते हों, वैसा ही दूसरों से करें, यही आदान प्रदान है।
११. कम बोलें, मधुर बोलें, कटु वचन नहीं बोलें।
१२. आचरण ही भाग्य निर्माता है, चरित्रवान बनें।
१३. प्रतिदिन शारीरिक व्यायाम अवश्य करें।
१४. क्रोध से बचें, जब भी क्रोध आवे, उसे तत्काल प्रकट न करें, कुछ रूक जावे। क्रोध की ज्वाला बुझ सकती है।
१५. अपनी क्षमता से अधिक कार्य न करें।
१६. दूसरों के एश्वर्य से अपनी तुलना न करें।
१७. लोग क्या कहते हैं, परेशान न हो, अपनी असलियत को जानें।
१८. समय का सदुपयोग करें, पर निन्दा, व गपशप में समय बर्बाद न करें।
१९. तन और मन दोनों को सत्कर्म में प्रवृत्त रखें।
२०. प्रभु से नित्य प्रार्थना करें कि जीवन को प्रेम, आनन्द, आशा व पवित्रता से परिपूर्ण रखे तथा कभी किसी का अहित न हो, इसका ध्यान रखें। (कम खाना, गमखाना, नमजाना व गुस्से को पी जाना–सुखी जीवन का रहस्य है)

सुखी जीवन

सुख हमारा निर्यात है और दु:ख हमारा निर्माण, दु:ख का निर्माण करना यदि व्यक्ति बंद कर दे तो वह सहज ही सुख की अनुभूति कर सकता है। बाहर का हर सुख भीतर के दु:ख को साथ लिए ही होता है। संसार में ऐसा कोई सुख नहीं जिनके साथ दु:ख जुड़ा हुआ न हो।

सुख संसार में नहीं, स्वयं में है। संसार भी बाहर नहीं है, वास्तविक संसार तो भीतर से जन्म लेता है। सुख बाह्य साधनों में नहीं, आत्म साधना में है। इच्छाओं की प्राप्ति में सुख नहीं है, स्वयं की संतुष्टि में सुख है।

एक निष्काम व्यक्ति ही सच्चे सुख की अनुभूति कर सकता है। कामनाओं से भरा मन कभी भी सुखी नहीं हो सकता है। कामना का स्वभाव ही दु:खमय होता है जहाँ अतृप्ति एवं असंतोष है। जितनी अपेक्षाएं अधिक होती हैं उतना ही दु:ख अधिक होता है अधिक अपेक्षा से मुक्त मानव सदैव सुख का अनुभव करता है। किसी भी चीज में अति सोचना भी दु:ख का कारण है, कल की अपेक्षा वर्तमान में जीने वाला व्यक्ति चिंताओं से बच सकता है।

प्रामाणिकता: अर्थात् प्रामाणिकता का आधार है, मैं जैसा भी हूँ उससे अन्यथा स्वयं को मानने और दिखाने की चेष्टा न करूँ। मैं ऐसा क्यों सोचूं–जिसे कह न सकूँ या जिसे कर न सकूं। मैं वैसा ही सोचूं जिसे कह सकूं और कर सकूं। ऐसी कथनी–करनी की समानता या मन, वचन और काया की समरसता ही प्रामाणिकता है। प्रामाणिकता के लिये चाहिए हृदय की सरलता, मन की स्पष्टता, वाणी का विवेक। मायावी व्यक्ति, छल–कपट करने वाला व्यक्ति कभी भी प्रामाणिक नहीं हो सकता है।

जो होता है, वह अच्छे के लिए होता है:– कोई भी घटना क्यों घटती है? इसके पीछे क्या मर्म है? हम नहीं जानते। इसलिये हमेशा यही सोचना चाहिये कि जो हुआ है अच्छे के लिए ही हुआ है यह सूत्र अपना लेने से मन में धैर्य का जन्म होता है। मन चिन्ता व तनाव से मुक्त रहता है। भावात्मक प्रतिक्रिया से आप बच जायेंगे। फलस्वरूप आपका व्यक्तित्व सुख का अनुभव करेगा और उस सुख से आपके व्यक्तित्व के भीतर संतुलन का जन्म होगा। खूबमांज कर साफ व सफेद कर दिया तथा ऊपर से तो साफ ही था। सभी के साथ वह अपने कमंडल में पानी भरकर लाया, सभी लाईन से महात्माजी की प्रतीक्षा में बैठ गये महात्माजी सभी के पानी का निरीक्षण करते हुये आये जो कमंडल अन्दर से खूब साफ किया हुआ था, स्वाभाविक ही था उसी कमंडल का पानी स्वच्छ दिखाई देगा, अत: महात्मा ने वह कमंडल उठाया, अन्य शिष्य जिनके कमंडल तो चमक रहे थे, परन्तु काला दिखाई दे रहा था अत: शिष्य कहने लगे महात्माजी पक्षपात क्यों हो रहा है? हम कमंडल कितने अधिक चमक रहें है वह तो इतना साफ नहीं है, महात्मा ने सभी शिष्यों पानी का निरीक्षण करवाया व पूछा कि स्वयं निर्णय करो, किसका पानी अधिक स्वच्छ दिखाई देता है। तब सभी ने महसूस किया व स्वत: स्वीकार किया कि बाहर की सफाई अधिक आवश्यकता अंतरंग को स्वच्छ रखने की है, अंतरंग की सफाई व स्वच्छता से साधना फलदायक होती है।

प्रार्थना

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो।
सत्य सयंम शील का, व्यवहार बारम्बार हो।
धर्म के विस्तार से संसार का उद्धार हो।
पाप का परित्याग हो और पुण्य का संचार हो।
ज्ञान की सद्ज्योति से, अज्ञानतम का नाश हो।
धर्म का सद् आचरण से शांति का आभास हो।
शान्ति सुख आनन्द का, प्रत्येक घर में वास हो।
वीर वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो।
रोग, भय, शोक त्याग स्मरण करे परमात्मा।
ज्योति से परिपूर्ण होवे, सब जगत की आत्मा।
सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई भी न घबरावे।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्मफल सब पावे।

पानी और जिन वाणी

पानी की तीन विशेषताएँ हैं। पानी पीने से तृष शान्त होती है, पानी से स्नान करने से शरीर का दाह शांत होता है और शरीर पर रहा मैल दूर होता है उसी प्रकार जिनवाणी के श्रवण से कषायों का दाह शांत होता है, विषयों की तृष्णा दूर होती है, मन निर्मल होता है, अत: जिनवाणी का श्रवण अवश्य करें।

वाणी

इस दुनिया में सबसे भयंकर जहर और सबसे मीठा अमृत जीभ में ही बसा हुआ है। जिस जीभ से सत्य, हितकर व प्रिय शब्दों का उच्चारण होता है, उस जीभ में अमृत बसा हुआ है और जिस जीभ से कटु, असत्य व मर्म भेदी शब्द बोले जाते हैं, उस जीभ में जहर बसा हुआ है।

चिन्तन बिन्दु

सार्थक जीवन उन्हीं का है, जो त्यागी हैं।
दुष्टता का प्रतिकार – शिष्टता से करो।
प्रेम और श्रद्धा के बिना कार्य सिद्धि संभव नहीं।
अपना दोष देखने में किसी का विरोध नहीं होता।
धन बढ़े–धर्म बढ़े तो विकास है,
धन बढ़े–धर्म घटे तो विनाश है

अच्छा होना महत्वपूर्ण है, पर महत्वपूर्ण होना उससे भी अच्छा है। सही लक्ष्य, निरन्तर प्रयास, आत्म विश्वास, बड़ों का आशीर्वाद, बुजुर्गों का मार्गदर्शन, गुरू एवं परिजन द्वारा प्रोत्साहन – ये सभी सफलता के सूत्र हैं।

ईश्वर

आमतौर पर यह जिज्ञासा होती है कि ईश्वर का स्वरूप क्या है? क्या सृष्टि के कर्ता अथवा सृष्टि संचालन में ईश्वर की कोई सक्रिय भूमिका है? इस प्रकार ईश्वर के बारे में जानने हेतु कई प्रश्न किये जाते हैं। 'जिन' शासन में आत्मा के विशुद्ध रूप को ही परमात्म स्वरूप व सिद्ध पद का अधिकारी माना गया है, वही जगदीश यानी जगत का ईश्वर बन जाता, जो जगत से सर्वथा कर्ममुक्त होकर अपने स्वभाव में स्थिर हो जाता है व सिद्ध पद को प्राप्त कर लेता है। वैसे मोक्षगामी आत्मा सभी परमात्मा पद की पूर्व भूमिका निभाते हुए साधना पथ पर आगे बढ़ते हैं व जब विषय कषाय व राग द्वेष से सर्वथा मुक्त हो जाते हैं, तब सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा बन जाते हैं। जिनशासन में जन्म से परमात्मा नहीं होते बल्कि साधना पथ पर उत्तरोत्तर आत्म विकास करते हुए शाश्वत पद को प्राप्त करने पर परमात्मा बन जाते हैं परमात्मा ईश्वर का दूसरा नाम है, ईश्वर की सृष्टि संचालन में कोई सक्रिय भूमिका नहीं होती। यदि ऐसा होता है तो जगत में सभी समान क्यों नहीं? कोई सुखी कोई दुःखी ऐसा भेदभाव क्यों? अर्थात सभी कर्माधीन हैं हाँ ईश्वर की उपासना से पुण्योपार्जन अवश्य होता है जो सुख का कारण माना जाता है।

विश्व में जहां प्राकृतिक महासत्ता यानी जीवात्मा के अतिरिक्त अजीव रूप में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश, काल व पुद्गल परमाणु साथ ही नैसर्गिक नियंत्रण जो स्वयंमेव अदृश्य शक्ति के रूप में सृष्टि के संचालन में सहायक हैं, वही जीवात्मा के लिए कर्म सत्ता (आत्मा के साथ लगे हुए पुण्य पाप रूपी शुभ अशुभ कर्म वर्गणाएं) संसार परिभ्रमण में कारण भूत है। जीव के सांसारिक सुख–दुख में पुण्य पाप रूपी कर्म का ही निमित्त होता है न कि किसी बाहरी शक्ति का। विश्व व्यवस्था क्रमबद्ध–कालचक्र में नियमित व निश्चित है, जो प्राकृतिक महासत्ता द्वारा स्वयंमेव संचालित है तथा संसारिक आत्मा का परिभ्रमण कर्मसत्ता के अधीन।

महान उत्कृष्ट पुण्य राशि की बदौलत विशिष्ट अतिशय युक्त चारों घाती कर्मों से मुक्त जो सत्र अरिहन्त परमात्मा होते हैं, वहीं जगत् के मार्गदृष्टा हैं तथा भव्य जीवों के आराध्यदेव हैं। सत्र परमात्मा अक्षयबोध स्वरूप है, जिनकी आराधना व प्रार्थना से अपनी सम्यक् श्रद्धा की पुष्टि की जाती है व नम्रतापूर्वक आत्मशक्ति का आह्वान किया जाता है। वैसे परमात्मा की भक्ति–मुक्ति के मार्ग में एक पगडंडी है। निष्काम भक्ति से उत्कृष्ट पुण्यानुबन्धी पुण्य होता है जो आत्म कल्याण में परक सहायक है। परमात्मा किसी के सुख–दुःख में निमित्त नहीं होते, बल्कि जगत के जीवों को पुण्य पाप रूपी शुभ–अशुभ कर्म के फल को भुगतते हुए साक्षी रूप में सत्र होने से ज्ञाता व दृष्टा की तरह जानते व देखते हैं। परमात्मा की सभी जीवों के प्रति अनन्त करूणा स्वाभाविक रूप से सर्वत्र व्याप्त है।

ईर्ष्या व द्वेष की ज्वाला हानिकारक

वैसे सभी जीव किसी न किसी रूप में ईर्ष्या व द्वेष के दूषण से ग्रसित हैं, कहीं कम व कहीं अधिक। बड़ी मछली छोटी मछली को अक्सर खा जाती है, परन्तु यह प्रक्रिया ईर्ष्या द्वेष का परिणाम नहीं है, क्योंकि बड़ी मछली के सामने कौन सी छोटी मछली है इस से दोनों अनभिज्ञ है। कुत्तों की जाति में ईर्ष्या–द्वेष की मात्रा अधिक होती है, ज्योंही एक कुत्ता किसी अपरिचित अथवा बाहर से आये कुत्ते को देखेगा तो भौंकने लग जायेगा व शत्रुतापूर्ण व्यवहार करेगा परन्तु उसमें भी यह गुण है कि अपने आस पास रहने वाले व परिचित कुत्तों के साथ बैर अथवा द्वेष नहीं रखेगा। जबकि यह अजीब सा लगता है कि जब मानव जाति में इन्सान प्रायः ईर्ष्या–द्वेष अपने वालों से अथवा परिचितों से ही अधिक करता है। यदि कोई अपने से आगे बढ़ जाता है अथवा किसी की प्रगति निरन्तर हो जाती है तब लगता है कि ऐसा क्यों हो रहा है। यह सोच कर एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या–द्वेष की भावना पनपने लगती है जो नहीं होनी चाहिये, यदि ऊपर वाली लाईन बड़ी है तो छोटी लाईन को बड़ा करने का प्रयास करना चाहिये न कि बड़ी को काट कर छोटी के बराबर लाने की भावना रखना। मेंढक जाति में प्रायः एक दूसरे की टांग खींचने का प्रवृत्ति अधिक होती है जिसका मानव जाति को अनुकरण नहीं करना चाहिये। आज किसी दूसरे की उन्नति व प्रगति हो रही है, कल अपनी भी हो सकती है, अतः जैसा आपका सोचना अथवा व्यवहार होगा उसी की पुनरावृत्ति सामने वालों में आपके प्रति होगी, अर्थात् हर क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होती है अतः ईर्ष्या–द्वेष के धुएं को पनपने के पूर्व ही शान्त कर देना चाहिये। ईर्ष्या–द्वेष से स्वयं का ही अहित है, किसी दूसरे का कुछ बिगड़ने वाला नहीं।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जा के हृदयै साँच है ताके हृदयै आप।
जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप।
जहाँ क्रोध तहाँ पाप है, जहाँ क्षमा तहाँ आप।

प्रमुख त्यौहार

मार्च : १ मार्च फाल्गुन शुक्ल पंचमी (५) २ मार्च फाल्गुन शुक्ल षष्ठी (६) ३ मार्च फाल्गुन शुक्ल सप्तमी (७) ४ मार्च होलाष्टक प्रारंभ फाल्गुन शुक्ल अष्टमी (८) ५ मार्च फाल्गुन शुक्ल नवमी (९) ६ मार्च फाल्गुन शुक्ल दशमी (१०) ७ मार्च आमलकी एकादशी पुष्य नक्षत्र, गोविंद वल्लभपंत दिवस फाल्गुन शुक्ल एकादशी (११) ८ मार्च प्रदोष व्रत अंतराष्ट्रीय महिला दिवस, पुष्य नक्षत्र फाल्गुन शुक्ल द्वादशी (१२) ९ मार्च फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी (१३) १० मार्च होलिका दहन, ईदे मिलाद पूर्णिमा व्रत फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी (१४) ११ मार्च होली, धुलेंडी बसंतोत्सव, स्नानदान पूर्णिमा फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा (१५) १२ मार्च संत तुकाराम ज. चैत्र कृष्ण एकम–द्वितीया (१–२) १३ मार्च चैत्र कृष्ण तृतीया (३) १४ मार्च संकष्टी गणेश चतुर्थी (चंद्रो.रा.९.२२) खरमास प्रारंभ चैत्र कृष्ण चतुर्थी (४) १५ मार्च रंग पंचमी विश्व उपभोक्ता संरक्षण दिवस चैत्र कृष्ण पंचमी (५) १६ मार्च चैत्र कृष्ण पंचमी (५) १७ मार्च चैत्र कृष्ण षष्ठी (६) १८ मार्च चैत्र कृष्ण सप्तमी (७) १९ मार्च शीतलाष्टमी, बसोरा चैत्र कृष्ण अष्टमी (८) २० मार्च भ. ऋषभदेव ज. चैत्र कृष्ण नवमी (९) २१ मार्च जमशेदी नवरोज (पारसी समुदाय) दिन–रात बराबर चैत्र कृष्ण दशमी (१०) २२ मार्च पापमोचनी एकादशी माँ कर्मा ज., विश्व जल संरक्षण दिवस चैत्र कृष्ण एकादशी (११) २३ मार्च भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव दिवस पंचक प्रारंभ चैत्र कृष्ण द्वादशी (१२) २४ मार्च वारुणी पर्व, प्रदोष व्रत विश्व क्षयरोग दिवस चैत्र कृष्ण त्रयोदशी (१३) २५ मार्च शिव चतुर्दशी गणेश शंकर विद्यार्थी दिवस चैत्र कृष्ण चतुर्दशी (१४) २६ मार्च अमावस्या चैत्र कृष्ण अमावस्या (१५) २७ मार्च गुड़ी पड़वा, नवरात्र घटस्थापना पंचक समाप्त चैत्र शुक्ल एकम (१) २८ मार्च चंद्र दर्शन, सिंधारा दौज चेटीचंड, झूलेलाल जन्मो. चैत्र शुक्ल द्वितीया (२) २९ मार्च गणगौर तीज व्रत चैत्र शुक्ल तृतीया (३) ३० मार्च विनायकी चतुर्थी (चंद्र अ.रा.९.३९) चैत्र शुक्ल चतुर्थी (४) ३१ मार्च वित्तीय वर्ष समाप्त चैत्र शुक्ल पंचमी (५)

अप्रैल : १ अप्रैल मूर्ख दिवस चैत्र शुक्ल षष्ठी (६) २ अप्रैल दुर्गाष्टमी व्रत ताराष्टमी चैत्र शुक्ल सप्तमी (७) ३ अप्रैल श्री राम नवमीं, जन्मोत्सव दुर्गाष्टमी (मतांतरे), पुष्य नक्षत्र चैत्र शुक्ल अष्टमी–नवमी (८–९) ४ अप्रैल पुष्य नक्षत्र चैत्र शुक्ल दशमी (१०) ५ अप्रैल कामदा एकादशी पाम संडे चैत्र शुक्ल एकादशी (११) ६ अप्रैल कामदा एकादशी चैत्र शुक्ल द्वादशी (१२) ७ अप्रैल भगवान महावीर ज., प्रदोष व्रत विश्व स्वास्थ्य दिवस चैत्र शुक्ल त्रयोदशी (१३) ८ अप्रैल हाटकेश्वर ज. चैत्र शुक्ल चतुर्दशी (१४) ९ अप्रैल पूर्णिमा व्रत हनुमान जन्मोत्सव चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (१५) १० अप्रैल गुड फ्रायडे वैशाख कृष्ण एकम (१) ११ अप्रैल आषा द्वितीया वैशाख कृष्ण द्वितीया (२) १२ अप्रैल गणेश चतुर्थी (चंद्रो.रा. ९.५१) ईस्टर संडे वैशाख कृष्ण तृतीया (३) १३ अप्रैल खरमास समाप्त जलियाँवाला बाग दिवस वैशाख कृष्ण चतुर्थी (४) १४ अप्रैल डॉ. आम्बेडकर ज., अग्नि शामक दिवस वैशाख कृष्ण पंचमी (५) १५ अप्रैल वैशाख कृष्ण षष्ठी (६) १६ अप्रैल वैशाख कृष्ण सप्तमी (७) १७ अप्रैल डॉ. राधाकृष्णन दिवस वैशाख कृष्ण अष्टमी (८) १८ अप्रैल तात्या टोपे दिवस वैशाख कृष्ण अष्टमी (८) १९ अप्रैल पंचक प्रारंभ वैशाख कृष्ण नवमी (९) २० अप्रैल वैशाख कृष्ण दशमी (१०) २१ अप्रैल वरुथिनी एकादशी वल्लभाचार्य ज. वैशाख कृष्ण एकादशी (११) २२ अप्रैल प्रदोष व्रत संत सेन ज. वैशाख कृष्ण द्वादशी (१२) २३ अप्रैल शिव चतुर्दशी वैशाख कृष्ण त्रयोदशी (१३) २४ अप्रैल श्राद्धदौ अमावस्या पंचक समाप्त वैशाख कृष्ण चतुर्दशी (१४) २५ अप्रैल स्नानदान अमावस्या वैशाख कृष्ण अमावस्या (१५) २६ अप्रैल चंद्र दर्शन शिवाजी ज. (तिथिनुसार) वैशाख शुक्ल एकम–द्वितीया (१–२) २७ अप्रैल अक्षय तृतीया परशुराम ज. वैशाख शुक्ल तृतीया (३) २८ अप्रैल विनायकी चतुर्थी (चं.अ.रा.१०.०३) वैशाख शुक्ल चतुर्थी (४) २९ अप्रैल आदिशंकराचार्य ज., सूरदास ज. वैशाख शुक्ल पंचमी (५) ३० अप्रैल वैशाख शुक्ल षष्ठी (६)

मई : १ मई पुष्य नक्षत्र, गंगा सप्तमी श्रमिक दिवस, केवट ज. वैशाख शुक्ल सप्तमी (७) २ मई माँ बंगलामुखी ज. वैशाख शुक्ल अष्टमी (८) ३ मई सीता नवमी जानकी ज. वैशाख शुक्ल नवमी (९) ४ मई वैशाख शुक्ल दशमी (१०) ५ मई मोहिनी एकादशी वैशाख शुक्ल एकादशी (११) ६ मई प्रदोष व्रत मोतीलाल नेहरू ज. वैशाख शुक्ल द्वादशी (१२) ७ मई नृसिंह ज. टैगोर ज. वैशाख शुक्ल त्रयोदशी (१३) ८ मई वैशाख पूर्णिमा वैशाख शुक्ल चतुर्दशी (१४) ९ मई स्नानदान वैशाखी पूर्णिमा गोखले ज., बुद्ध पूर्णिमा वैशाख शुक्ल पूर्णिमा (१५) १० मई ज्येष्ठ कृष्ण एकम (१) ११ मई ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया (२) १२ मई संकष्टी गणेश चतुर्थी (चं.रा.९.४४) ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया (३) १३ मई ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी (४) १४ मई ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी (५) १५ मई ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी (६) १६ मई पंचक प्रारंभ ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी (७) १७ मई रानी अहिल्याबाई ज. ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी (८) १८ मई ज्येष्ठ कृष्ण नवमी (९) १९ मई ज्येष्ठ कृष्ण दशमी (१०) २० मई अचला एकादशी ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी (११) २१ मई राजीव गाँधी पु., पंचक समाप्त ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी (१२) २२ मई प्रदोष व्रत ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी (१३) २३ मई शिव चतुर्दशी ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी (१४) २४ मई वट पूजा, शनि ज. वट सावित्री अमावस्या ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या (१५) २५ मई नवतपा प्रारंभ आल्हा ज., चंद्र दर्शन ज्येष्ठ शुक्ल एकम (१) २६ मई ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया (२) २७ मई रंभातीज व्रत, पुष्य नक्षत्र नेहरू पु., महाराणा प्रताप ज., छत्रसाल ज. ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया (३) २८ मई विनायकी चतुर्थी (चं.अ.रा.९.२५) वीर सावरकर ज., पुष्य नक्षत्र, श्रुत पंचमी ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी (४) २९ मई ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी–षष्ठी (५–६) ३० मई ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी (७) ३१ मई धूम्रपान निषेध दिवस ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी (८)

जून : १ जून महेश नवमी बाल सुरक्षा दिवस, दादाभाई नरौजी दिवस ज्येष्ठ शुक्ल नवमी (९) २ जून नवतपा समाप्त गंगा दशहरा व्रत, गायत्री ज. ज्येष्ठ शुक्ल दशमी (१०) ३ जून निर्जला एका. व्रत भीमसेनी एकादशी ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी (११) ४ जून ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी (१२) ५ जून प्रदोष व्रत विश्व पर्यावरण दिवस ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी (१३) ६ जून शिव चतुर्दशी ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी (१४) ७ जून वट सावित्री पूर्णिमा संत कबीर ज. ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा (१५) ८ जून आषाढ़ कृष्ण एकम (१) ९ जून आषाढ़ कृष्ण द्वितीया (२) १० जून आषाढ़ कृष्ण तृतीया (३) ११ जून संकष्टी गणेश चतुर्थी (चं.रा.९.४४) आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी (४) १२ जून आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी (४) १३ जून उधमसिंह दिवस पंचक प्रारंभ आषाढ़ कृष्ण पंचमी (५) १४

जून आषाढ़ कृष्ण षष्ठी (६) १५ जून आषाढ़ कृष्ण सप्तमी (७) १६ जून शीतलाष्टमी, बसोरा आषाढ़ कृष्ण अष्टमी (८) १७ जून पंचक समाप्त आषाढ़ कृष्ण नवमी (९) १८ जून लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस आषाढ़ कृष्ण दशमी (१०) १९ जून योगिनी एका. व्रत गुरु हरगोविंद ज. आषाढ़ कृष्ण एकादशी (११) २० जून प्रदोष व्रत (शनि प्रदोष) आषाढ़ कृष्ण द्वादशी (१२) २१ जून शिव चतुर्दशी आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी–चतुर्दशी (१३–१४) २२ जून सोमवती अमावस्या आषाढ़ कृष्ण अमावस्या (१५) २३ जून मुखर्जी दिवस आषाढ़ शुक्ल एकम (१) २४ जून रथ यात्रा, पुष्य योग चंद्र दर्शन, रानी दुर्गावती दिवस आषाढ़ शुक्ल द्वितीया (२) २५ जून पुष्य योग आषाढ़ शुक्ल तृतीया (३) २६ जून विनायकी चतुर्थी व्रत (चंद्र.अ.रा.९.४०) अंतरराष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी (४) २७ जून मधुमेह दिवस आषाढ़ शुक्ल पंचमी (५) २८ जून चैमासी प्रारंभ आषाढ़ शुक्ल षष्ठी (६) २९ जून आषाढ़ शुक्ल सप्तमी (७) ३० जून आषाढ़ शुक्ल अष्टमी(८)

जुलाई : १ जुलाई भड़ली नवमी डॉक्टर्स डे आषाढ़ शुक्ल नवमी (९) २ जुलाई आषाढ़ शुक्ल दशमी (१०) ३ जुलाई देवषयनी एका. व्रत हरिषयनी ग्यारस आषाढ़ शुक्ल एकादशी (११) ४ जुलाई प्रदोष व्रत वामन द्वादशी, विवेकानंद दिवस आषाढ़ शुक्ल द्वादशी (१२) ५ जुलाई शिव चतुर्दशी चार्तुमास प्रारंभ आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी (१३) ६ जुलाई पूर्णिमा व्रत मुखर्जी ज. आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी (१४) ७ जुलाई गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा स्नान दान पूर्णिमा आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा (१५) ८ जुलाई पार्थिव पूजन प्रारंभ श्रावण में शाक वर्जित श्रावण कृष्ण एकम (१) ९ जुलाई श्रावण कृष्ण द्वितीया (२) १० जुलाई संकष्टी चतुर्थी व्रत (चंद्रो.रा. ९.०१) पंचक प्रारंभ, अवतार मेहेर बाबा मौन दिवस श्रावण कृष्ण तृतीया (३) ११ जुलाई विश्व जनगणना दिवस श्रावण कृष्ण चतुर्थी (४) १२ जुलाई मौना पंचमी श्रावण कृष्ण पंचमी (५) १३ जुलाई श्रावण सोमवार प्रारंभ श्रावण कृष्ण षष्ठी (६) १४ जुलाई मंगला गौरी व्रत श्रावण कृष्ण सप्तमी (७) १५ जुलाई पंचक समाप्त श्रावण कृष्ण अष्टमी (८) १६ जुलाई श्रावण कृष्ण नवमी (९) १७ जुलाई श्रावण कृष्ण दशमी (१०) १८ जुलाई कामिका एकादशी श्रावण कृष्ण एकादशी (११) १९ जुलाई प्रदोष व्रत श्रावण कृष्ण द्वादशी (१२) २० जुलाई श्रावण सोमवार शिव चतुर्दशी श्रावण कृष्ण त्रयोदशी (१३) २१ जुलाई मंगला गौरी व्रत श्राद्ध अमावस्या श्रावण कृष्ण चतुर्दशी (१४) २२ जुलाई हरियाली, स्नानदान अमावस्या खगास सूर्यग्रहण श्रावण कृष्ण अमावस्या (१५) २३ जुलाई सिंधारा दोज, चंद्र दर्षन आजाद–तिलक ज. श्रावण शुक्ल एकम–द्वितीया (१–२) २४ जुलाई हरियाली तीज श्रावण शुक्ल तृतीया (३) २५ जुलाई विनायकी चतुर्थी (चंद्र.अ.रा. ८.४६) श्रावण शुक्ल चतुर्थी (४) २६ जुलाई नागपंचमी श्रावण शुक्ल पंचमी (५) २७ जुलाई श्रावण सोमवार श्रावण शुक्ल षष्ठी (६) २८ जुलाई मंगला गौरी व्रत तुलसीदास ज., शीतला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी श्रावण शुक्ल सप्तमी (७) २९ जुलाई श्रावण शुक्ल अष्टमी (८) ३० जुलाई श्रावण शुक्ल नवमी (९) ३१ जुलाई मो.रफी पु., प्रेमचंद ज. श्रावण शुक्ल दशमी (१०)

अगस्त : १ अगस्त पुत्रदा एकादशी तिलक दिवस श्रावण शुक्ल एकादशी (११) २ अगस्त श्रावण शुक्ल द्वादशी (१२) ३ अगस्त श्रावण सोमवार, प्रदोष व्रत श्रावण शुक्ल त्रयोदशी (१३) ४ अगस्त मंगला गौरी व्रत शिव चतुर्दशी श्रावण शुक्ल चतुर्दशी (१४) ५ अगस्त श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबंधन पूर्णिमा व्रत श्रावण शुक्ल पूर्णिमा (१५) ६ अगस्त भादों में दही त्याज्य पंचक प्रारंभ भाद्रपद कृष्ण एकम (१) ७ अगस्त टैगोर दिवस भाद्रपद कृष्ण एकम (१) ८ अगस्त कजली तीज व्रत भाद्रपद कृष्ण द्वितीया (२) ९ अगस्त संकष्टी चतुर्थी व्रत (चंद्रो.रा. ८.३२ बजे) स्वाधीनता संग्राम दिवस (सन् १९४२) भाद्रपद कृष्ण तृतीया (३) १० अगस्त भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी (४) ११ अगस्त हलछठ पंचक समाप्त, खुदीराम बोस दिवस भाद्रपद कृष्ण पंचमी (५) १२ अगस्त हलषष्ठी हलछठ भाद्रपद कृष्ण षष्ठी (६) १३ अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत लेफ्ट हेण्डर्स डे भाद्रपद कृष्ण सप्तमी (७) १४ अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भाद्रपद कृष्ण अष्टमी–नवमी (८–९) १५ अगस्त स्वतंत्रता दिवस भाद्रपद कृष्ण दशमी (१०) १६ अगस्त जया अजा एकादशी रामकृष्ण परमहंस दिवस भाद्रपद कृष्ण एकादशी (११) १७ अगस्त जया अजा एकादशी बछ बारस, गोवत्स द्वादशी, पर्युषण पर्व (श्वेतां. जैन) भाद्रपद कृष्ण द्वादशी (१२) १८ अगस्त प्रदोष व्रत पुष्य नक्षत्र भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी (१३) १९ अगस्त शिव चतुर्दशी पुष्य नक्षत्र भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी (१४) २० अगस्त कुषोत्पाटिनी अमावस्या, पोला पिठोरा राजीव गाँधी ज. भाद्रपद कृष्ण अमावस्या (१५) २१ अगस्त चंद्र दर्शन भाद्रपद शुक्ल एकम (१) २२ अगस्त रमजान मास, रोजा प्रारंभ भाद्रपद शुक्ल द्वितीया (२) २३ अगस्त हरितालिका तीज, रोटतीज, संकष्टी गणेश चतुर्थी (चंद्र अ.रा. ८.३१) श्री गणेश जन्म., चंद्रदर्षन निषेध भाद्रपद शुक्ल तृतीया (३) २४ अगस्त ऋषि पंचमी दसलक्षण व्रत प्रारंभ, पर्युषण पर्व (दिगं.जैन) भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी (४) २५ अगस्त भाद्रपद शुक्ल पंचमी (५) २६ अगस्त सूर्य षष्ठी, चंपा षष्ठी संतान सप्तमी भाद्रपद शुक्ल षष्ठी (६) २७ अगस्त महालक्ष्मी व्रत प्रारंभ दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, टेरेसा ज. भाद्रपद शुक्ल सप्तमी (७) २८ अगस्त दधीचि ज. भाद्रपद शुक्ल अष्टमी (८) २९ अगस्त भाद्रपद शुक्ल नवमी (९) ३० अगस्त सुगंध दशमी भाद्रपद शुक्ल दशमी (१०) ३१ अगस्त पद्मा (परिवर्तनी) एका. व्रत भाद्रपद शुक्ल एकादशी (११)

सितंबर : १ सितंबर वामन ज., श्रवण द्वादशी प्रदोष व्रत भाद्रपद शुक्ल द्वादशी (१२) २ सितंबर भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी (१३) ३ सितंबर अनंत चतुर्दशी, पर्युषण पर्व समाप्त पंचक प्रारंभ, श्री गणेश विसर्जन भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी (१४) ४ सितंबर पूर्णिमा व्रत, दादाभाई नरौजी ज. पितृपक्ष महालय प्रारंभ, क्षमावाणी पर्व भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा (१५) ५ सितंबर प्रतिपदा श्राद्ध शिक्षक दिवस, डॉ.राधाकृष्णन ज. आश्विन कृष्ण एकम (१) ६ सितंबर द्वितीया श्राद्ध आश्विन कृष्ण द्वितीया (२) ७ सितंबर तृतीया श्राद्ध पंचक समाप्त आश्विन कृष्ण तृतीया (३) ८ सितंबर चतुर्थी श्राद्ध विश्व साक्षरता दिवस, संकष्टी गणेश चतुर्थी (चंद्रो.रा. ८.३१) आश्विन कृष्ण चतुर्थी (४) ९ सितंबर पंचमी श्राद्ध आश्विन कृष्ण पंचमी (५) १० सितंबर षष्ठी श्राद्ध आश्विन कृष्ण षष्ठी (६) ११ सितंबर सप्तमी श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत विनोबा भावे ज. आश्विन कृष्ण सप्तमी (७) १२ सितंबर अष्टमी श्राद्ध आश्विन कृष्ण अष्टमी (८) १३ सितंबर मातृनवमी श्राद्ध आश्विन कृष्ण नवमी (९) १४ सितंबर दशमी, एकादशी श्राद्ध हिंदी दिवस, महादेवी ज., पुष्य नक्षत्र आश्विन कृष्ण दशमी (१०) १५ सितंबर द्वादशी श्राद्ध इंदिरा एकादशी, पुष्य नक्षत्र आश्विन कृष्ण एकादशी (११) १६ सितंबर त्रयोदशी श्राद्ध प्रदोष व्रत आश्विन कृष्ण द्वादशी–त्रयोदशी (१२–१३) १७ सितंबर चतुर्दशी श्राद्ध विश्वकर्मा ज., शिव चतुर्दशी आश्विन कृष्ण चतुर्दशी (१४) १८ सितंबर श्राद्ध महालय समाप्त सर्वपितृ अमावस्या आश्विन कृष्ण अमावस्या (१५) १९ सितंबर शारदीय नवरात्र प्रारंभ, बैठकी कलश स्थापना, अग्रसेन ज. आश्विन शुक्ल एकम (१) २० सितंबर चंद्र दर्शन आश्विन शुक्ल द्वितीया (२) २१ सितंबर ईद–उल–फितर आश्विन शुक्ल तृतीया (३)

२२ सितंबर विनायकी चतुर्थी व्रत (चंद्र अ.रा.९.००) आश्विन शुक्ल चतुर्थी (४) २३ सितंबर उपांग ललिता पंचमी आश्विन शुक्ल पंचमी (५) २४ सितंबर आश्विन शुक्ल षष्ठी (६) २५ सितंबर देवी आवाहन पं. दीनदयाल ज. आश्विन शुक्ल सप्तमी (७) २६ सितंबर दुर्गाष्टमी व्रत महादुर्गाष्टमी आश्विन शुक्ल अष्टमी (८) २७ सितंबर महानवमी विश्व पर्यटन दिवस, राजा राममोहन राय पु. आश्विन शुक्ल नवमी (९) २८ सितंबर विजया दशमी, दशहरा जवारे विसर्जन आश्विन शुक्ल दशमी (१०) २९ सितंबर भरत मिलाप आश्विन शुक्ल एकादशी (११) ३० सितंबर पापांकुशा एकादशी पंचक प्रारंभ आश्विन शुक्ल द्वादशी (१२)

अक्टूबर : १ अक्टूबर प्रदोष व्रत रक्तदान दि आश्विन शुक्ल द्वादशी (१२) २ अक्टूबर शिव चतुर्दशी गाँधी, शास्त्री ज. आश्विन शुक्ल त्रयोदशी (१३) ३ अक्टूबर शरद–कोजागरी पूर्णिमा व्रत आश्विन शुक्ल चतुर्दशी (१४) ४ अक्टूबर शरद पूर्णिमा, विद्यासागर जन्म. कार्तिक स्नान प्रा., वाल्मीकि ज. आश्विन शुक्ल पूर्णिमा (१५) ५ अक्टूबर पंचक समाप्त कार्तिक कृष्ण एकम (१) ६ अक्टूबर कार्तिक कृष्ण द्वितीया (२) ७ अक्टूबर करवा चौथ, करक चतुर्थी संकष्टी गणेश चतुर्थी (चंद्रो.रा. ७.५० बजे) कार्तिक कृष्ण तृतीया (३) ८ अक्टूबर वायुसेना दिवस, प्रेमचंद दिवस कार्तिक कृष्ण चतुर्थी (४) ९ अक्टूबर कार्तिक कृष्ण पंचमी–षष्ठी (५–६) १० अक्टूबर कार्तिक कृष्ण सप्तमी (७) ११ अक्टूबर श्री राधाष्टमी, अहोई अष्टमी जयप्रकाश नारायण ज. , पुष्य नक्षत्र कार्तिक कृष्ण अष्टमी (८) १२ अक्टूबर राममोहन लोहिया दिवस कार्तिक कृष्ण नवमी (९) १३ अक्टूबर कार्तिक कृष्ण दशमी (१०) १४ अक्टूबर रमा एकादशी, गोवत्स द्वादशी कार्तिक कृष्ण एकादशी (११) १५ अक्टूबर धनतेरस, धन्वंतरि ज. प्रदोष व्रत कार्तिक कृष्ण द्वादशी (१२) १६ अक्टूबर नरक चैदस, शिव चतुर्दशी, हनुमान ज. विश्व खाद्य दिवस कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (१३) १७ अक्टूबर दीपावली, महालक्ष्मी पूजा अमावस्या, दयानंद सरस्वती निर्वाण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी (१४) १८ अक्टूबर स्नान अमावस्या, महावीर निर्वाण. गोवर्धन पूजा, अन्नकूट कार्तिक कृष्ण अमावस्या (१५) १९ अक्टूबर भाई दूज, यम द्वितीया चंद्र दर्शन, गौतम स्वामी केवल ज्ञान कार्तिक शुक्ल एकम (१) २० अक्टूबर जिल्काद मास. मु. प्रा. कार्तिक शुक्ल द्वितीया (२) २१ अक्टूबर विनायकी चतुर्थी व्रत (चंद्र अ.रा.७.५४) आजाद हिंद फौज स्थापना दिवस कार्तिक शुक्ल तृतीया (३) २२ अक्टूबर कार्तिक शुक्ल चतुर्थी (४) २३ अक्टूबर पांडव पंचमी, सूर्य षष्ठी व्रत ज्ञान पंचमी कार्तिक शुक्ल पंचमी (५) २४ अक्टूबर सूर्य षष्ठी, डाला छठ कार्तिक शुक्ल षष्ठी (६) २५ अक्टूबर संत जलाराम बापा ज. कार्तिक शुक्ल सप्तमी (७) २६ अक्टूबर गोपाष्टमी कार्तिक शुक्ल अष्टमी (८) २७ अक्टूबर अक्षय, आँवला नवमी पंचक प्रारंभ कार्तिक शुक्ल नवमी (९) २८ अक्टूबर कार्तिक शुक्ल दशमी (१०) २९ अक्टूबर देवउठनी ग्यारस, तुलसी विवाह प्रबोधिनी एका., कालिदास, नामदेव ज. कार्तिक शुक्ल एकादशी (११) ३० अक्टूबर कार्तिक शुक्ल द्वादशी (१२) ३१ अक्टूबर प्रदोष व्रत इन्दिरा गाँधी बलिदिवस, सरदार पटेल ज. कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी (१३)

नवंबर : १ नवंबर बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत मप्र–छग स्थापना दिवस, पंचक समाप्त कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी (१४) २ नवंबर कार्तिक पूर्णिमा गुरुनानक ज., विद्यासागर आचार्य पद दिवस कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा (१५) ३ नवंबर भेड़ाघाट मेला अगहन कृष्ण एकम (१) ४ नवंबर अगहन कृष्ण द्वितीया (२) ५ नवंबर संकष्ठी गणेश चतुर्थी (चंद्रो.रा.७.३६) अगहन कृष्ण तृतीया (३) ६ नवंबर अगहन कृष्ण चतुर्थी (४) ७ नवंबर अगहन कृष्ण पंचमी (५) ८ नवंबर अगहन कृष्ण षष्ठी (६) ९ नवंबर श्री काल भैरवाष्टमी अगहन कृष्ण सप्तमी (७) १० नवंबर अगहन कृष्ण अष्टमी (८) ११ नवंबर अगहन कृष्ण नवमी–दशमी (९–१०) १२ नवंबर उत्पन्ना एकादशी मदनमोहन मालवीय दिवस अगहन कृष्ण एकादशी (११) १३ नवंबर उत्पन्ना एकादशी अगहन कृष्ण द्वादशी (१२) १४ नवंबर बाल दिवस, नेहरू ज. शनि प्रदोष व्रत अगहन कृष्ण त्रयोदशी (१३) १५ नवंबर शिव चतुर्दशी अगहन कृष्ण चतुर्दशी (१४) १६ नवंबर सोमवती अमावस्या अगहन कृष्ण अमावस्या (१५) १७ नवंबर लाला लाजपत राय बलि. दिवस अगहन शुक्ल एकम (१) १८ नवंबर चंद्र दर्शन अगहन शुक्ल द्वितीया (२) १९ नवंबर इंदिरा गाँधी, रानी लक्ष्मीबाई ज. अगहन शुक्ल तृतीया (३) २० नवंबर विनायकी चतुर्थी व्रत (चंद्र अ.रा. ८.३२) अगहन शुक्ल चतुर्थी (४) २१ नवंबर विवाह पंचमी, श्री पंचमी नाग दिवाली अगहन शुक्ल पंचमी (५) २२ नवंबर स्कन्ध षष्ठी चंपा षष्ठी अगहन शुक्ल पंचमी (५) २३ नवंबर अगहन शुक्ल षष्ठी (६) २४ नवंबर गुरु तेगबहादुर शहीदी दिवस पंचक प्रारंभ अगहन शुक्ल सप्तमी (७) २५ नवंबर संत ज्ञानेश्वर पु. अगहन शुक्ल अष्टमी (८) २६ नवंबर अगहन शुक्ल नवमी (९) २७ नवंबर अगहन शुक्ल दशमी (१०) २८ नवंबर बकरीद, मोक्षदा एकादशी पंचक समाप्त, गीता ज., मौन ग्यारस अगहन शुक्ल एकादशी (११) २९ नवंबर प्रदोष व्रत अगहन शुक्ल द्वादशी (१२) ३० नवंबर अगहन शुक्ल त्रयोदशी (१३)

दिसंबर : १ दिसंबर पूर्णिमा व्रत, दत्तात्रेय ज. एड्स दिवस अगहन शुक्ल चतुर्दशी (१४) २ दिसंबर स्नानदान पूर्णिमा अगहन शुक्ल पूर्णिमा (१५) ३ दिसंबर राजेंद्र प्रसाद ज. किसान दिवस पौष कृष्ण एकम (१) ४ दिसंबर जलसेना दिवस पौष कृष्ण द्वितीया (२) ५ दिसंबर संकष्टी चतुर्थी व्रत (चंद्रो.रा.८.०४) पौष कृष्ण तृतीया–चतुर्थी (३–४) ६ दिसंबर आम्बेडकर दिवस पौष कृष्ण पंचमी (५) ७ दिसंबर झंडा दिवस पौष कृष्ण षष्ठी (६) ८ दिसंबर पंचक प्रारंभ पौष कृष्ण सप्तमी (७) ९ दिसंबर पौष कृष्ण अष्टमी (८) १० दिसंबर ओशो जन्मोत्सव मानव अधिकार दिवस पौष कृष्ण नवमी (९) ११ दिसंबर पौष कृष्ण दशमी (१०) १२ दिसंबर सफला एकादशी चंद्र प्रभु ज., भ. पार्श्वनाथ ज. पौष कृष्ण एकादशी (११) १३ दिसंबर प्रदोष व्रत पौष कृष्ण द्वादशी (१२) १४ दिसंबर शिव चतुर्दशी ऊर्जा बचत दिवस पौष कृष्ण त्रयोदशी (१३) १५ दिसंबर सरदर वल्लभ भाई पटेल दिवस पौष कृष्ण चतुर्दशी (१४) १६ दिसंबर अमावस्या खरमास प्रारंभ पौष कृष्ण अमावस्या (१५) १७ दिसंबर पौष शुक्ल एकम (१) १८ दिसंबर घासीदास ज. चंद्र दर्षन पौष शुक्ल द्वितीया (२) १९ दिसंबर मोहर्रम मास (१) मु. पौष शुक्ल तृतीया (३) २० दिसंबर विनायकी चतुर्थी व्रत पौष कृष्ण चतुर्थी (४) २१ दिसंबर पंचक प्रारंभ पौष शुक्ल पंचमी (५) २२ दिसंबर पौष शुक्ल षष्ठी (६) २३ दिसंबर पौष शुक्ल सप्तमी (७) २४ दिसंबर राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस पौष शुक्ल अष्टमी (८) २५ दिसंबर क्रिसमस डे, बड़ा दिन मदनमोहन मालवीय ज. पौष शुक्ल नवमी (९) २६ दिसंबर पंचक समाप्त पौष शुक्ल नवमी (९) २७ दिसंबर कत्ल की रात गालिब ज. पौष शुक्ल दशमी (१०) २८ दिसंबर मुहर्रम (ताजिया) पुत्रदा एकादशी पौष शुक्ल एकादशी–द्वादशी (११–१२) २९ दिसंबर प्रदोष व्रत पौष शुक्ल त्रयोदशी (१३) ३० दिसंबर पौष शुक्ल चतुर्दशी (१४) ३१ दिसंबर खण्डग्रास चंद्रग्रहण, पूर्णिमा बैरवा ज. पौष शुक्ल पूर्णिमा (१५)◆

वि० सं० २०६६ सन् २००९-२०१० ई० मुख्य पर्व

२७/३/२००९	वसन्त नवरात्र आरम्भ
२९/३/२००९	गणगौर
३/४/२००९	श्री राम नवमी
७/४/२००९	महावीर जयन्ती
९/४/२००९	श्री हनुमान जयन्ती
२७/४/२००९	अक्षय तृतीया, आखातीज
२९/४/२००९	आदि जगद्गुरू शंकराचार्य जयंती
३/५/२००९	श्री सीता (जानकी) जयन्ती
९/५/२००९	बुद्ध जयन्ती
२४/५/२००९	वटसावित्री व्रत
२/६/२००९	गंगा दशहरा
३/६/२००९	निर्जला एकादशी
२२/६/२००९	सोमवती अमावस्या
२३/६/२००९	गुप्त नवरात्र आरम्भ
२४/६/२००९	रथयात्रा
३/७/२००९	देव शयनी एकादशी
३/७/२००९	चातुर्मास्य व्रत आरम्भ
७/७/२००९	गुरु पूर्णिमा
१२/७/२००९	नाग पंचमी (मरुस्थल)
२६/७/२००९	नाग पंचमी
५/८/२००९	रक्षाबंधन, श्रावणी
१२/८/२००९	हल षष्ठी
१३/८/२००९	श्री कृष्ण जन्माष्टमी स्मार्त
१४/८/२००९	श्री कृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव
१५/८/२००९	गोगा नवमी
१७/८/२००९	वत्सद्वादशी, बछबारस
२२/८/२००९	हरितालिका, तीज
२३/८/२००९	वरद श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
२४/८/२००९	ऋषि पंचमी
२५/८/२००९	लोलार्क षष्ठी
३/९/२००९	अनन्त चतुर्दशी
४/९/२००९	महालया आरम्भ
१२/९/२००९	जीवित व्रत, महालक्ष्मी व्रत
१३/९/२००९	मातृ नवमी
१७/९/२००९	विश्वकर्मा पूजा
१८/९/२००९	महालया, पितृ विसर्जन
१९/९/२००९	शरद नवरात्र आरम्भ
२६/९/२००९	महाअष्टमी व्रत
२७/९/२००९	श्री दुर्गा नवमी
२८/९/२००९	विजयादशमी
३/१०/२००९	शरद पूर्णिमा, महालक्ष्मी पूजा
७/१०/२००९	करवा चौथ
१७/१०/२००९	दीपावली
२०/१०/२००९	यम द्वितीया, भईया दूज
२४/१०/२००९	श्री सूर्य षष्ठी व्रत
२६/१०/२००९	गोपाष्टमी
२७/१०/२००९	अक्षय नवमी, जगद्धात्री पूजा
२९/१०/२००९	देवउठनी ग्यारस
२/११/२००९	कार्तिक पूर्णिमा
२८/११/२००९	मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती
२/१२/२००९	दत्तात्रेय जयन्ती
१५/१/२०१०	मौनी अमावस्या
१६/१/२०१०	गुप्त नवरात्र आरम्भ
२०/१/२०१०	वसन्त पंचमी, सरस्वती पूजा
२२/१/२०१०	अचला सप्तमी
२४/१/२०१०	हरसू ब्रह्मदेव जयन्ती
३०/१/२०१०	माघी पूर्णिमा
१२/२/२०१०	महाशिवरात्रि व्रत
१६/२/२०१०	फुलेरिया दूज
२८/२/२०१०	होलिकादाह
१/३/२०१०	होली, वसन्तोत्सव, छारेंडी
१५/३/२०१०	सोमवती अमावस्या
१५/३/२०१०	सम्वत् २०६६ सम्पन्न।

संस्कार क्या है?

संस्कार का अर्थ है मनुष्य के अन्दर छुपी एवं दबी पड़ी प्राचीन संस्कृति को उभार कर सामाजिक जीवन के अनुसार ढालने की एक अनवरत प्रक्रिया। एक दिन में खराब हो जाने वाले दूध को दही बनाकर, घी में परिवर्तित करना, दूध का संस्कार कर उसे पौष्टिक बनाना एवं वर्षों खराब न होने वाला घी बनाना ही संस्कारिता है। भारतीय जीवन पद्धति में संस्कार प्रदान करने की सुन्दर व्यवस्था है। यह प्रक्रिया प्रारम्भ में घर, फिर विद्यालय, मैदान एवं फिर संस्था आदि से अनवरत चलती रहनी चाहिये।

सम्मेलन के नये सदस्यों का स्वागत

आजीवन सदस्य

नाम : **ओम प्रकाश गर्ग**
कार्यालय का पता :
कोरडोबा इन्जीनियरिंग प्रा.लि.
एन.एस.–३, प्रथम फेस, आदित्यपुर इण्डि. एरिया
जमशेदपुर – ८३२१०९
मोबाइल नं.–०९२३४६१३४९४

आजीवन सदस्य

नाम : **भोलानाथ केडिया**
कार्यालय का पता :
मेसर्स काशी वस्त्रालय
मेन रोड चास (बोकारो)
झारखण्ड–८२७०१३
मोबाइल नं.–०९४३११२८१०४

विशिष्ट सदस्य

नाम : **अनिल कुमार काबरा**
कार्यालय का पता :
पद्मावती सिक्योरिटी, ६/२६/४८०
रेलवे गेट के पास, न्यू गंज रोड
निजामाबाद – ५०३००२
मोबाइल नं.–०९२४६९७५५५३

नाम : **बजरंग लाल अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
होटल उमंग, २१ काली माटी रोड,
सांकची, जमशेदपुर–८३१००१
मोबाइल नं.–०९८३५१३५४५०

नाम : **पुरुषोत्तम दास गर्ग**
कार्यालय का पता :
शारदा एजेन्सीज, होलसेल आर्युवेद
दवा, प्रोडक्ट्स मेन रोड, जुगसलाई
जमशेदपुर, झारखण्ड–८३१००६
मोबाइल नं.–०९८३५३३६९०४

नाम : **ओमप्रकाश मालू**
कार्यालय का पता :
एस. रंगलाल एण्ड क.
७–८–७३५, गाँधी गंज,
निजामाबाद–५०३००१
मोबाइल नं.–०९४४००२००१४

नाम : **शंकर लाल लिखरा**
कार्यालय का पता :
एस.एल.लिखरा, लिखरा भवन,
नया बाजार, जमशेदपुर–८३१००६
मोबाइल नं.–०९९७३७८२६५६

नाम : **प्रकाश कुमार पारख**
कार्यालय का पता :
अमर भवन, पी–१०, न्यु हावड़ा ब्रिज
अप्रोच रोड, पाचवां तल्ला
कोलकाता–७०० ००१
मोबाइल नं.–०९८३० ९९६२४५

नाम : **संदीप मुरारका**
कार्यालय का पता :
बालाजी ब्रिक्स उद्योग, मारवाड़ी पारा
रोड, जुगसलाई, जमशेदपुर
झारखण्ड – ८३१००६
मोबाइल नं.–०९४३१११७५०७

पुस्तक समीक्षा

हाइकू काव्य की अनूठी कृति- "कठै तो सोचो!"

- सत्यनारायण इन्दौरिया 'सत्य'

हिन्दी और राजस्थानी भाषा के प्रशस्त साहित्यकार श्री केसरीकान्त शर्मा 'केसरी' की राजस्थानी काव्य रचना "कठै तो सोचो" एक उत्तम किंवा श्रेयकर रचना कृति है। केसरीजी हिन्दी, राजस्थानी, अंग्रेजी, बंगला भाषा के विद्वान–मनीषी हैं। निरन्तर साहित्य साधना में रत रहते हुए साहित्य समृद्धि के उन्नयन में अहोरात्र लगे रहते हैं। आप ने राजस्थानी, हिन्दी, अंग्रेजी को संयुक्त कर एक नव्य राजस्थानी शब्द कोष की रचना की है। जो कि प्रकाशन की प्रक्रिया में है। 'पड़बिंब'के बाद यह उनकी 'हाइकुड़ा' व्यंग्यात्मक कृति 'कठै तो सोचो!' पाठकों को प्रस्तुत की गई है। अपने मनोभावों को व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत करना रचनाकार की श्रेष्ठता को उजागर करता है।

हाइकू की शुरुआत जापान से मानी जाती है परन्तु तदोपरान्त फ्रांस, इंग्लैण्ड, अमेरिका, जर्मनी, स्पेन, इटली युगोस्लोवाकिया, रूस आदि देशों में भी इनका प्रयत्न सराहनीय रहा है। कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने भी इनसे प्रभावित होकर कुछ हाइकू लिखे हैं जो कि पठनीय एवं मननीय है। केसरी जी की यह हाइकुड़ा रचना कृति प्रेरणादायक है एवं नव्य चिन्तन की ओर पाठक को उत्प्रेरित करती है। इसमें तीन सौ बासठ हाइकू और अस्सी दोहे समाहित हैं इनकी काव्य सृजन श्रृंखला सराहनीय है। आज का व्यक्ति बौद्धिक चातुर्य में अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मानता है, चाहे समाज उनके वैयक्तिक या सामाजिक कार्यों की आलोचना–प्रत्यालोचना करता रहे। इसी का उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि–जीणै रौ ढब, सैं रो न्यारो–न्यारो सै, के खोसांऽ थारो !/दर ना हुवै,सीधी कुत्तै री पूंछ, मूंछ री बात ! /.....उभाणो आवै, जूती पैर'र जावै, जै सियाराम ! ..... वर्तमान का आदमी समाज से क्या चाह रहा है और स्वयं समाज के लिए क्या कर रहा है। इस सम्बन्ध में उनकी तथ्यात्मक उक्तियाँ हैं–प्रेम सूं बुला, सिर कै बळ आस्यां, चणा भी खास्यां!/रण जीत ले, जण कोनी जीत्यो जा, लो'की लकीर।

भ्रटाचार पैर व्यंग्य करते हुए वह कह रहे हैं कि–बै फूस खायो, अै पळड़ा चाखैगा, ढां–ढां रोवैगो।/क्यूं मोसा मारो, खा पाया तो खा पाया, जनतन्त्र है।/"भैरुंजी जाग्या, तेल बाकळा खाग्या, क्यूं मूंडफोड़ो।/"बै खायी गोळी, पूंता पायी नियोळी, क्यूं बार घालो?

हकीकत में केसरीकान्त जी 'केसरी' की कृति "कठै तो सोचो!" एक विदुषिता पूर्ण उत्तम कृति है। मानव जीवन में आने वाले व्यवधान की घाटी को पार करने की कला का इस में प्रत्यक्ष विवेचन कर समाज को सचेष्ट करने का प्रयास किया गया है। यह कृति पाठक को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने में सक्षम सिद्ध होगी और दिशा–बोध प्रदान करेगी, ऐसा हम विश्वास करते हैं। पुस्तक की छपाई, बांइडिंग एवं मुख चित्र आकर्षक तथा मनमोहक है, एतदर्थ श्री केसरी जी को हार्दिक साधुवाद एवं बधाई। मूल्य–१००/–

- प्रकाशक : प्रतिज्ञा प्रकाशन
आनन्दपुरा वार्ड-१, मण्डावा-३३३७०४(झूंझनू)

लोकार्पण

'प्रेम डगर' का लोकार्पण समारोह

महानगर के सुपरिचित कवि मुरारी लाल डालमिया की चतुर्थ काव्यकृति 'प्रेम डगर' का लोकार्पण यहां रविवार को ज्ञानमंच पर संपन्न हुआ। श्री बड़ा बाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा गया था। डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र ने 'प्रेम डगर' का विमोचन करते हुए अपने सारगर्भित भाषण में इस आयोजन के मुख्य उद्योक्ता विश्वम्भर नेवर की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह अपने (मारवाड़ी) समाज में विद्यमान प्रतिभाओं को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। वह अपने समाज के लिए बेहद संवेदनशील हैं।

'प्रेम डगर' का उल्लेख करते हुए डॉ. मिश्र ने कहा कि मुरारी लाल जी की काव्य यात्रा 'प्रेम डगर' पर ही चलती रही है। 'मैंने एक बार मार्क्सवादी विचारधारा के प्रसिद्ध कवि सुभाष मुखोपाध्याय से पूछा था कि कौन सा रंग ऐसा है जो मिटता नहीं, टिकता है। उनका जवाब था मानवीय संवेदना में सबसे अधिक महत्व प्रेम का है।'

डॉ. मिश्र ने भारतीय और विजातीय प्रेम का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय प्रेम के मूल में मंगल है जब कि विजातीय प्रेम सतही काम भावना तक सीमित है। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के एक वक्तव्य का उल्लेख करते हुए कहा कि वहां प्रेम के नाम पर जितना हल्ला होता है उतने ही तलाक भी होते हैं।

साहित्यकार और समाजसेवी जुगलकिशोर जैथलिया ने प्रेम के विभिन्न रूपों और अवस्थाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय चिंतन प्रेम से परिपूर्ण है। जवानी में पारलौकिक प्रेम की बात अच्छी नहीं लगती। इसी तरह उम्र के ढलान पर इहलौकिक प्रेम अप्रासंगिक हो जाता है।

'छपते–छपते' के संपादक विश्वम्भर नेवर ने कहा कि मारवाड़ी समाज के लोग सिर्फ उद्योग–व्यापार में ही नहीं लगे रहते बल्कि साहित्य, संस्कृति और समाजसेवा से भी जुड़े रहते हैं। मुरारी लाल जी इसके अच्छे उदाहरण हैं।

श्री मामराज अग्रवाल, श्री जयकिशन दास सादानी और श्री आर. के. जौहरी ने भी अपने भाषणों में डालमिया जी की काव्य साधना की प्रशंसा की। अंत में सुपरिचित गायिका संगीता ने श्री डालमिया की पुस्तक के कुछ अंशों का गायन प्रस्तुत किया।◆

सीकर नागरिक परिषद् (कोलकाता)

होली प्रीति सम्मेलन

प्रधान अतिथि विजय गुजरवासिया, विशिष्ट अतिथि घनश्याम दास अग्रवाल, सचिव दामोदर प्रसाद बिदावतका,परिषद् अध्यक्ष घनश्याम प्रसाद सोभासरिया, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष नन्दलाल रूँगटा प्रधान वक्ता विधायक श्री दिनेश बजाज

सीकर नागरिक परिषद् (कोलकाता) का होली प्रीति सम्मेलन दिनांक ०१.०३.२००९ को रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, राजस्थानी नाच गानों एवं परिषद परिवार के बच्चों के कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। परिषद् अध्यक्ष घनश्याम प्रसाद सोभासरिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि जिस तरह बसंत आगमन पर पेड़ के पुराने पत्ते व सूखे पत्ते गिर जाते हैं और नये पत्ते आते हैं उसी तरह होली का पर्व आपस में मनमुटाव, दुश्मनी भूलाकर प्रेम एवं भाईचारा बढ़ाने का पर्व है। सेवा के क्षेत्र में परिषद् ने अपना अलग स्थान बना लिया है। प्रति वर्ष होली एवं दीपावली प्रीति सम्मेलन के अलावा नये साल पर उद्यान गोष्ठी का आयोजन होता है। समाज सेवा के लिए राजस्थान फाउंडेशन व परिषद् की ओर से हल्दीघाटी सम्मान देने की घोषणा की गयी है। परिषद् का अपना भवन भी हो गया है। भवन के आधुनिकीकरण का काम शुरू कर दिया गया है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष नन्दलाल रूँगटा ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि मारवाड़ी समाज जहाँ भी है, सेवा के लिए विख्यात है। सेवा ही परमो धर्म: को आधार मानकर हम लोग चलते हैं। प्रधान अतिथि विजय गुजरवासिया, विशिष्ट अतिथि घनश्याम दास अग्रवाल एवं प्रधान वक्ता विधायक दिनेश बजाज ने परिषद् के सेवा कार्यों की सराहना की। सचिव दामोदर प्रसाद बिदावतका ने संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अंध निवारण के अलावा संस्था गरीब छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति, गरीब कन्याओं के विवाह के लिए आर्थिक मदद के अलावा पश्चिम बंगाल एवं राजस्थान में होम्योपैथी चिकित्सालय सुचारु ढंग से चालू है, जहां प्रतिदिन सैंकड़ों रोगियों की चिकित्सा की जाती है। संयोजक सुनीता लोहिया, रमेश शर्मा, राधा सोमानी, ने मंच का संचालन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में लक्ष्मी कुमार बियानी, सुरेश शर्मा, विनोद अग्रवाल, रामअवतार मोर, काशी प्रसाद धेलिया, गोपीराम पंसारी, गगदीश सिंघी, दीपक खोवाला, अनिल पोद्दार, रवि लोहिया आदि सक्रिय थे।

साहित्यिक सेवाओं के लिए घोड़ेला का सम्मान

लूनकरनसर (बीकानेर) : बाल साहित्यकार रामजीलाल घोड़ेला को गणतन्त्र दिवस २००९ पर उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए तहसील स्वरीय समारोह में उपखण्ड अधिकारी बीरबल सिंह ने प्रशंसा प्रमाण–पत्र भेंट कर सम्मानित किया। राजस्थानी और हिन्दी में साहित्यरचना में तल्लीन रहे घोड़ेला के बाल साहित्य की ***'जादू रो चिराग'*** व ***'मिट्टी के रंग-बच्चों के संग'*** व राजस्थानी काव्य की ***'झबरको'*** पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी रचनाएँ विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित हो रही हैं। शिक्षाविद् डॉ. मदन गोपाल लड्ढा, ओंकार नाथ योगी, गुलाबराय भारद्वाज, खेतराम गुरिया, राजू राम 'राज' ने घोड़ेला को सम्मानित होने पर बधाई दी है व प्रसन्नता व्यक्त की है।

मारवाड़ी सम्मेलन के होली प्रीति सम्मेलन में

महिलाओं हेतु गृह उद्योग योजना की घोषणा

कोलकाता। पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का होली प्रीति सम्मेलन रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राजस्थानी लोक गीतों भरी एक सुरमई सांझ का आयोजन किया गया। होली गीतों की माला ने लोगों का मन मोह लिया। राजस्थानी नृत्यों की प्रस्तुति को देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गये। कार्यक्रम का उद्घाटन समाजसेवी श्याम सुन्दर बेरीवाल ने किया। प्रधान अतिथि निर्मल गोयल, मुख्य वक्ता रतन शाह विशिष्ट अतिथि त्रिलोक चन्द डागा उपस्थित थे। इसके अलावे राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रूँगटा, राष्ट्रीय निवर्तमान अध्यक्ष सीताराम शर्मा व राष्ट्रीय सचिव रामअवतार पोद्दार उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता उपाध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने करते हुए सदस्यों के प्रति होली की शुभकामनाएं प्रकट की। सम्मेलन के सचिव रामगोपाल बागला ने सम्मेलन की गतिविधि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शीघ्र ही महिलाओं के लिये गृह उद्योग योजना शुरू की जाएगी। उन्होंने कहा कि इसके लिए जगह का चयन किया जा रहा है। जगह मिलते ही यह योजना शुरू की जाएगी। प्रारम्भ में २५ महिलाओं को रोजगार दिया जाएगा। श्री बागला ने कहा कि होली–दीपावली के मौके पर एक दूसरे से मिलकर हम गिले शिकवे दूर करते हैं। सम्मेलन ने गत डेढ़ वर्षों में सेवा कार्यों का काफी विस्तार किया। आज सदस्यों की संख्या बढ़कर ५०० से ऊपर हो गयी है। समारोह को सफल बनाने में कृष्ण कुमार डोकानिया, पवन शर्मा, रामनिवास शर्मा, विश्वनाथ भुवालका, शिव कुमार क्याल, इन्द्रचंद मेहरीवाल, रामप्रसाद भालोटिया, ओमप्रकाश गोयल, महेन्द्र गुप्ता आदि काफी सदस्य उपस्थित थे। संचालन विश्वनाथ सिंघानिया ने किया।

श्री गजानन्द साहेवाला अध्यक्ष पद पर निर्वाचित

श्री गजानन्द साहेवालाजी गुवाहाटी हाई कोर्ट के पहले मारवाड़ी सीनियर वकील हैं जो कि बार परिषद ऑफ सिक्किम के अध्यक्ष निर्वाचित किए गए हैं। जिनका जन्म २६ अप्रैल १९५४ नामती बंगाली गाँव में हुआ था। जो आसाम के शिवसागर जिले में स्थित है। इनके माता–पिता का नाम स्व. सूरजमल साहेवाला और श्रीमती दुर्गा देवी साहेवाला था। सन् १९७९ से ही गुवाहाटी हाई कोर्ट में अभ्यास कर रहे थे। और इन्हें जुलाई सन् १९९९ में सीनियर वकील की पदवी प्राप्त हुई। इन्होंने सन् २००० में प्रथम एस.जी.लो का संस्थापन किया।

ये बार परिषद् ऑफ आसाम, मेघालय, मानीपूर, त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैंड, अरूणाचल प्रदेश और सिक्किम में न्यासी के पद पर हैं। आसाम एडवोकेट वेलफेयर फाउण्ड कमिटी के अध्यक्ष, नार्थ ईस्ट इण्डिया लिगल एडुकेशन सोसाइटी के सचिव भी हैं। और गुवाहाटी रोटेरी क्लब के सदस्य भी हैं।

मारवाड़ी महिला समिति अध्यक्ष का दौरा

जूनागढ़। रविवार,१ मार्च २००९ को गायत्री मन्दिर में मारवाड़ी महिला समिति की प्रादेशिक सभापति का स्वागत किया गया। श्री मनी शुशीला फरमार्निआ अध्यक्ष उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी महिला समिति श्रीमती सन्ध्या अग्रवाल अध्यक्ष कटक शाखा, श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल भवानी पटना योगदान कर नेत्रदान के महत्व एवं समिति के कार्य के विषयों में सूचित किये। गायत्री परिवार ट्रस्ट एवं मारवाड़ी महिला समिति के तरफ से चमेली देवी महिला महाविद्यालय में छः माह शिक्षा ग्रहण की हुई पच्चीस महिलाओं को सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। इस सभा में श्रीमती चन्द्रकला अग्रवाल अध्यक्ष जूनागढ़ शाखा, श्रीमती बसन्ती पाढ़ी सिलाई शिक्षक, श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल पूर्व अध्यक्ष मारवाड़ी महिला समिति, श्रीमती मीना खेमका, श्रीमती कंचन अग्रवाल, श्रीमती सुनीता इन्डिरानी, आशादेवी खेमका, श्रीमती कान्ता देवी बंसल, श्रीमती प्रभा देवी ने योगदान किये।

एक पत्र आप सबके नाम

प्रियवर,

आज सुबह जब तुम सोकर उठे, मैंने सोचा कि तुम मुझसे कुछ बातें करोगे-मेरी राय-सलाह लोगे या कल की उपलब्धियों के लिए मुझे धन्यवाद दोगे। पर मैंने देखा कि तुम काम पर जाने के लिए एक ठीक-ठाक पहनावा खोजने में रह गये। मैंने सोचा कि थोड़ा इन्तजार किया जाए। पर तुम तो तैयार होने में इतना व्यस्त रहे कि चलते वक्त तुम्हें मेरी तरफ देखने की भी फुरसत नहीं मिली, एक बार तो तुम तकरीबन पन्द्रह मिनट तक कुर्सी पर बस ऐसे ही बैठे रहे। तभी अचानक तुम कुर्सी पर से उठ खड़े हुए। मुझे लगा कि तुम मुझसे बात करने को आ रहे हो। पर तुम तो फोन पर अपने किसी मित्र से बातचीत करने में मशगूल हो गए।

मैंने तुम्हें काम पर जाते देखा और दिन भर यही इन्तजार करता रहा कि तुम मुझसे कुछ बात करोगे। पर तुम्हारी व्यस्तता ज्यों की त्यों बनी रही। खाने के समय भी, तुमने देखा कि आसपास बैठे तुम्हारे ही दोस्त मुझसे थोड़ी बहुत बातें कर रहे थे, पर तुमने ऐसा कुछ भी नहीं किया। खैर ! मैने यह सोचा कि हो सकताहै कि घर वापस लौकर तुम मुझसे बातें करोगे। तुम्हें घर पर वापस देख कर ऐसा लगा कि तुम्हें ढेर सारे काम करने को थे। तुमने कुछ काम किया भी। पर उसके तुरंत बाद तुमने टीवी चला दिया। मुझे नहीं मालुम कि टीवी का कार्यक्रम तुम्हें अच्छा लग रहा था या नहीं। पर इतना जरुर था कि तुम रिमोट से धड़ाधड़ चैनेल लगातार बदल रहे थे। मैंने धैर्यपूर्वक इन्तजार करने को सोचा। तुम जब टीवी देखने के बाद खाना खा लिए, तो मुझे लगा कि तुम कम से कम अब तो बात करोगे। पर इस बार भी ऐसा नहीं हुआ। शायद तुम बहुत ही थक गये थे। अपने परिवार वालों से विदा लेकर तुम तुरन्त अपने बिस्तर में समा गये और सो गये। चलो यह भी सही। मुझे तो लगता है कि तुम्हें शायद इस बात का एहसास ही नहीं की मै हर पल तुम्हारे साथ रहता हूँ और मैं तुम्हारे लिये ही हूँ। तुम्हें शायद यह भी नहीं मालूम कि मुझमें अपार धैर्य है। और मैं यह भी चाहता हूँ कि तुम भी धैर्यवान बनो।

देखो, मैं तुमसे इतना स्नेह करता हूँ कि हर एक दिन मैं इसी उम्मीद में काट देता हूँ कि तुम मुझसे कभी न कभी बात अवश्य करोगे, कभी न कभी बीते कल की उपलब्धियों की खातिर नतमस्तक होगे। पर जैसा कि ताली कभी भी एक हाथ से नहीं बजती, वैसे ही बातचीत भी कभी एक-तरफा नहीं हुआ करती।

अब तुम्हारे सो कर उठने का समय हो गया है। मैं आज भी इन्तजार करुंगा कि तुम मुझसे थोड़ी बहुत बात-चीत करोगे। और अगर आज भी ऐसा नहीं हुआ, तो न सही। मेरे इन्तजार करने का सिलसिला चलता रहेगा। चाहे जो भी हो, मेरा स्नेह एवं प्यार तुम्हारे लिए हमेशा ही उपलब्ध होगा।

आज का दिन भी तुम्हारे लिए उपलब्धियों का दिन हो-इसी कामना एवं आशीर्वाद के साथ,

तुम्हारा अपना

With best compliments from :-

JAI BHARAT COMMERCIAL CORPORATION

MANUFACTURERS & SUPPLIERS OF :-

C.I./M.S./E.R.W./G.I./P.V.C./Rubber Pipes (Tubes),
D.I.Fittings, Pipes Fittings, A.C.Pressure Pipes,
C.I.D. Joints, M.S. Rounds, Tor Steel,
Rubber Gasket and Rings and Pig Lead etc.

✸ ✸ ✸

23/24, RADHA BAZAR STREET, 3RD FLOOR, KOLKATA-700 001
Phone : 2242-5889, 2242-7995, 2231-8944
Fax : 2242-9813, E.mail : jbccsonthalia@yahoo.com

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI

INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 28, March 2009
RNI Regd. No. 2868/68

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com